वर्ष 2025

हिम-प्रभा

अंक-95वां

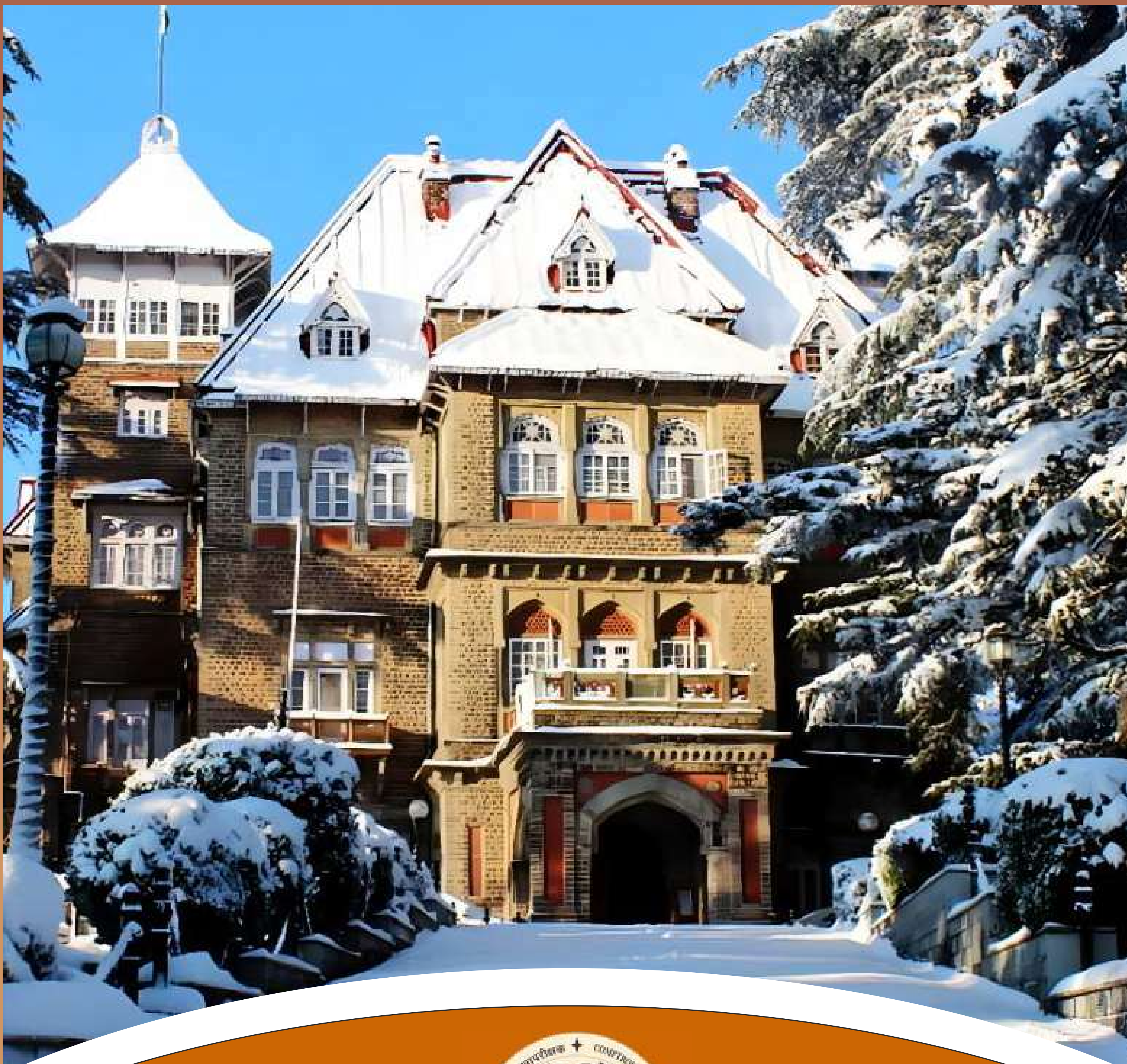

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171003

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171003

टिप्पणियां हिन्दी में लिखिए।
मसौदे हिन्दी में तैयार कीजिए।
अशुद्धियों से घबराइए नहीं।
अविलम्ब अभ्यास कीजिए।

हिम-प्रभा

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

2025

कार्यालय

प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)

हिमाचल प्रदेश, शिमला-171003

कार्यालय

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

हिमाचल प्रदेश, शिमला-171003

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

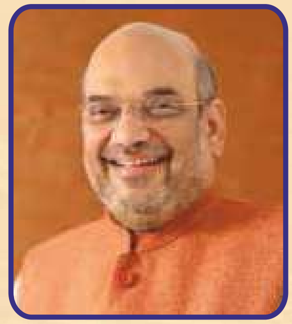

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

स्वत्वाधिकार : प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)

प्रकाशन: हिम-प्रभा

प्रकाशक : प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
तथा
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

अंक: 95 वां

मूल्य: राजभाषा के प्रति निष्ठा

मुद्रक: सिंह इंटरप्राइजेज

मुख्य पृष्ठ परिचय: गोर्टन कैसल का मुख्य द्वार

निवेदन

सम्माननीय रचनाकारों से रचनाएं भेजते समय निम्नलिखित नियमों का पालन करने का विनम्र अनुरोध है :

1. रचनाएं टंकित हो, दो प्रतियों में प्रेषित की जाएं जो स्पष्ट व सुवाच्य हो।

2. प्रकाशनार्थ रचनाएं हिन्दी कक्ष, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा एवं लेखा व हकदारी) हिमाचल प्रदेश, शिमला में उपलब्ध कराई जाएं।

संपादक-मण्डल के पास रचनाओं को अस्वीकार करने का अधिकार सुरक्षित है। अस्वीकृत रचनाएं लौटाने का प्रावधान नहीं है, अतः रचना की मूल प्रति अपने पास सुरक्षित रखे।

संपादक-मण्डल

मुख्य संरक्षक	श्री सुशील ठाकुर प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
संरक्षक	श्री पुरुषोत्तम तिवारी प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
अध्यक्ष, संपादन समिति:	श्रीमती मीनू शर्मा, उपमहालेखाकार (लेखा व हकदारी)
सहायक, संपादन समिति :	श्री संदीप डाबर वरिष्ठ उपमहालेखाकार (लेखापरीक्षा)
संपादन सलाहकार समिति:	श्री फूल सिंह सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री ओम प्रकाश डोई सहायक निदेशक (राजभाषा) श्रीमती सूरज नेगी सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
सहयोग:	सुश्री समता खानचंदानी कनिष्ठ हिंदी अनुवादक सुश्री शालू कनिष्ठ हिंदी अनुवादक श्री राम प्रकाश मीणा कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

प्रकाशित रचनाओं में रचनाकारों के निजी विचार है। संपादक मण्डल का रचनाकारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है। अतः पत्रिका में व्यक्त विचारों के लिए कार्यालय एवं 'हिम-प्रभा' का संपादक मंडल किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं है। रचनाओं की मौलिकता एवं उसमें प्रयुक्त शब्दों के लिए भी रचनाकार स्वयं उत्तरदायी है।

संदेश

सुशील ठाकुर
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
एवं मुख्य संरक्षक

राजभाषा हिंदी को समर्पित पत्रिका "हिमप्रभा" का 95वां अंक प्रकाशित करते हुए मुझे हार्दिक उल्लास की अनुभूति हो रही है। राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए इस कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किए गए प्रयास सराहनीय हैं।

राजभाषा हिंदी का प्रयोग हमारी राष्ट्रीय पहचान और हमारी ऐतिहासिक संस्कृति का अभिन्न अंग है। हिंदी भाषा न केवल हमारे संचार का माध्यम है बल्कि यह हमारे देश की आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक एकता और अखंडता का प्रतीक है। कार्यालय में हिंदी के प्रचार-प्रसार और उपयोग को बढ़ावा देने के लिए हम सभी का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह हमारा दायित्व है कि हम अपने दैनिक कार्यों में हिंदी का अधिकतम प्रयोग करें।

कार्यालय की इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं/लेख तथा कविता में विषय का विवरण सहज एवं सुबोध तरीके से किया गया है। पत्रिका का मुख्य उद्देश्य कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा कार्यालयीन कार्य में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करना एवं हिंदी भाषा के महत्व को पुनर्जीवित करना है। मुझे आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग एवं निरंतर प्रगति में सहायक होगी। यह पत्रिका केवल एक सूचना का स्रोत नहीं है, बल्कि एक ऐसा मंच भी है जहाँ हम सभी अपने अनुभव, विचार और दृष्टिकोण साझा करते हैं।

पत्रिका से जुड़े प्रत्येक रचनाकार, संपादक मंडल के सदस्यों और प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ और पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

संदेश

पुरुषोत्तम तिवारी
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
एवं संरक्षक

संयुक्त हिन्दी पत्रिका "हिम-प्रभा" का 95वां अंक आपके समक्ष लाना एक सुखद अनुभूति है। कार्यालयीन पत्रिकाएं हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए एक प्रकाश-पुंज की तरह कार्य करती हैं, जो कार्यालय में न सिर्फ राजभाषा के प्रति सकारात्मक वातावरण निर्मित करने में सहयोग करती है अपितु कर्मचारियों की रचनात्मक सोच को भी विस्तार देती है।

हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूर्ण करने पर विगत वर्ष 'हीरक वर्ष' के रूप में मनाया गया था, और इस वर्ष राजभाषा विभाग की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण करने पर हम 'स्वर्ण जयंती समारोह' के साक्षी बने है। इन वर्षों में राजभाषा की ख्याति और लोकप्रियता देशीय परिधि को लांघ कर अंतर्राष्ट्रीय फलक पर प्रकाशमान हुई है, जो निःसंदेह गर्व का विषय है।

भाषाई उपलब्धियों के अतिरिक्त देश आज चौतरफा विकास के मार्ग पर अग्रसर है, जिसकी झलक हम औद्योगिक, प्रौद्योगिक और तकनीकी क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से देख सकते है। मुझे प्रसन्नता है कि यह कार्यालय भी अपने कर्तव्यों और दायित्वों के प्रति सचेत एवं प्रतिबद्ध है। हिन्दी भाषी क्षेत्र होने के कारण राजभाषा के प्रति आत्मीयता सहज गोचर होती है।पत्रिका का यह अंक भी कई विषय-वस्तुओं को समेटे हुए है, जो कर्मचारियों की सृजनशीलता को प्रतिबिम्बित करता है।

मैं 'हिम-प्रभा'पत्रिका के प्रकाशन में लेखनसामग्री एवं प्रकाशन प्रक्रिया से जुड़े अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देते हुए आशा करता हूं कि भविष्य में भी आप सबके सतत सहयोग से यह पत्रिका और भी रोचक एवं समृद्ध बनेगी।

पत्रिका के सफल संपादन और प्रकाशन के लिए मेरी मंगलकामनाएं!!!

शुभकामनाओं सहित।

संपादकीय

मीनू शर्मा
उप महालेखाकार (लेखा व हकदारी)

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय की हिंदी पत्रिका "हिम-प्रभा" के 95वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे खुशी है कि इस पत्रिका के माध्यम से हम राजभाषा हिंदी के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी को व्यक्त कर पाते हैं। इस पत्रिका का उद्देश्य राजभाषा नीति के पालन के साथ-साथ अधिकारियों/कर्मचारियों की अभिव्यक्ति और अध्ययन कौशल को संवर्धित करना है।

भाषा की जीवंतता उसकी ताकत, सक्रियता व समृद्धता से पहचानी जाती है। हमारा भारत देश भिन्न-भिन्न प्रदेशों का मिश्रित बहुभाषी देश है। राजभाषा हिंदी सभी भाषा-भाषियों, जनता और सरकार के बीच एक संपर्क भाषा के रूप में कार्य करती है। विश्व पटल पर हिंदी को एक नई पहचान मिल रही है। भाषा की लोकप्रियता में सम्मान उसके निरंतर प्रयोग से बढ़ता है। संपर्क की भाषा हो या अध्ययन की, हर जगह हिंदी प्रेमियों की संख्या में वृद्धि स्पष्ट दिखाई दे रही है। हिंदी हृदय की ही नहीं रोज़गार की भी भाषा बनकर उभरी है।

राजभाषा का विकास हमारा संवैधानिक दायित्व होने के साथ-साथ हमारी नैतिक ज़िम्मेदारी भी है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि "हिम-प्रभा" का यह अंक राजभाषा हिंदी के सतत् प्रयोग को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगा। अतः "हिम-प्रभा" के संपादन मंडल से जुड़ी समस्त टीम को हार्दिक बधाई।

शुभकामनाओं सहित!!!

संदेश

संदीप डाबर
वरिष्ठ उप- महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

कार्यालय की लोकप्रिय पत्रिका 'हिमप्रभा' के 95 अंक के प्रकाशन के सुअवसर पर मुझे अत्यंत हर्ष एवं संतोष की अनुभूति हो रही है। इसके लिए संपादक-मण्डल सहित समस्त रचनाकार एवं सहयोगीगण बधाई के पात्र है, जिनके सार्थक एवं सहकारी प्रयासों से ही पत्रिका के रूपायन को एक नया आयाम प्राप्त हुआ है। पत्रिका दोनों कार्यालयों के कार्मिकों को कार्यालयीन गतिविधियों से इतर उनकी साहित्यिक एवं रचनात्मक लेखन प्रतिभा को हिन्दी में अभिव्यक्त करने का एक सशक्त मंच प्रदान करती है और उनके सृजनात्मक कौशल एवं रचनाधर्मिता की एक मानक कसौटी सिद्ध होती है, जिसकी अपेक्षाओं के अनुरूप वे बेहद खरे उतरते है। इस प्रकार पत्रिका न केवल कार्मिकों की सृजनात्मक अभिव्यक्तियों एवं क्षमताओं को दस्तावेजी स्वरूप में संजोकर प्रस्तुत करती है बल्कि राजभाषा हिन्दी के सतत उन्नयन एवं प्रचार-प्रसार हेतु लक्ष्यों की प्रतिपूर्ति में भी अपना अहम् योगदान प्रदर्शित करती है।

लेखन की सार्थकता तभी है जब रचनाधर्मिता स्वः प्रेरित और उत्सर्जित हो, अनमने ढंग से या जोर ज़बरदस्ती से तो सिर्फ जोड़-तोड़ ही की जा सकती है । कार्यालयीन कार्यों में भी हिन्दी का प्रयोग उल्लास से किया जाना चाहिए। मैं आशा करता हूं कि सभी कार्मिक राजभाषा हिन्दी के प्रति निष्ठावान रहेंगे और अपने कार्यों में हिन्दी भाषा के शत-प्रतिशत प्रयोग को सुनिश्चित करेंगे।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए पुनः बधाई!

शुभकामनाओं सहित!!!

अनुक्रमणिका

क्रम	शीर्षक / लेखन विधा	रचनाकार	पृष्ठ
1.	"और.... वो चली गई"	श्री शैलेश सोनी	1
2.	मैं हारूंगी नहीं	सुश्री सूरज नेगी	2-3
3.	सोशल मीडिया का बढ़ता बुरा प्रभाव	श्री संदीप	4-6
4.	मेरी कर्नाटक यात्रा	सुश्री अनुराधा सूद	7-11
5.	आधुनिक तकनीकी-फायदे व नुकसान	श्री संजय शर्मा	12-13
6.	हमारे जीवन में व्यायाम और योग का महत्व	श्री मोहित	14-15
7.	निज यात्रा : सोनीपत से शिमला	सुश्री मनीषा	16-17
8.	माँ की नसीहत	सुश्री सोनिया शर्मा	18-19
9.	चम्पा-चमेली की लोककथा (दादी की कहानी)	सुश्री मीरा पोद्दार	20-21
10.	सोशल मीडिया: जुड़ाव का साधन या अकेलेपन का कारण?	सुश्री सुप्रिया पाण्डेय	22-23
11.	अनसुलझा रहस्य	श्री पवन कुमार	24-25
12.	देवेन्द्र- एक आम युवक की असाधारण उड़ान	श्री रंजन कुमार	26-28
13.	वक्त पाबंदी का अजीब वाकया	श्री गौरीशंकर	29-30
14.	आस्था एवं विश्वास	जगदीश चंद कश्यप	31
15.	हिमाचल प्रदेश का सौंदर्य, कोमलता और आपदाएं	श्री मुकेंद्र कुमार	32-35
16.	जो सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ खूब लड़े सिख धर्म के पांचवे गुरु अर्जुन देव	श्री रविंदर सिंह	36
19.	वो सहमे पल	सुश्री किरण शर्मा	37-38
20.	विराट प्रकृति	सुश्री समता खानचंदानी	39-40
21.	पानी ख़त्म होने को है	श्री ओम प्रकाश डोई	41
22.	जीवन का चक्र	श्री राहुल मेघवाल	42
23.	राजस्थान	श्री इंद्र जीत मीणा	43

अनुक्रमणिका

क्रम	शीर्षक / लेखन विधा	रचनाकार	पृष्ठ
24.	बचपन की मस्ती	सुश्री कमला देवी	44
25.	दर्द पहाड़ों का	श्री जगदीश कुमार	45-46
26.	लड़की	सुश्री अन्तमा	47
27.	धरती का शृंगार	श्री विष्णु शर्मा	48
28.	नया साल	श्री रमेश चंद्र शर्मा	49
29.	क्या आया जमाना	सुश्री सुनीता देवी	50
30.	सब झूठ हैं	सुश्री नेहा कुमारी	51-52
31.	"त्रिउंड की यादगार यात्रा"	श्री विशाल राठी	53-54
32.	बर्बाद हो जाओगे	श्री अरुण कुमार	55
33.	वो नारी है	सुश्री कल्पना यादव	56
34.	"अभी मजदूर नीचे बैठा है"	श्री अभिमन्यु कमलेश राणा	57
35.	आत्म शक्ति बोध	श्री संजय शर्मा	58
36.	एक आज़ादी .... ऐसी भी	श्री शैलेश सोनी	59-60
37.	"मैं और मेरा मन"	सुश्री शालू	61-62
38.	भगवान के बोल	श्री अरुण कुमार	63-64
39.	झरोखा 2024-25		65-70
40.	वर्ष 2024-25 में सेवानिवृत्त हुए अधिकारी / कर्मचारी (लेखापरीक्षा)		71
41.	वर्ष 2024-25 में सेवानिवृत्त हुए अधिकारी / कर्मचारी (लेखा व हकदारी)		72
42.	हिन्दी पखवाड़ा-2024 प्रतियोगिता परिणाम		73
43.	हिमप्रभा अंक 94 वें के "प्रशंसा पत्र"		74-77
44.	हिन्दी पखवाड़ा-2024 समापन समारोह		78

"और.... वो चली गई"

शैलेश सोनी
सहायक लेखा अधिकारी

चंद रोज़ पहले ही तो मिला था उससे। हर बार की तरह समझने-समझाने का दौर चल रहा था। राधिका की आँखों में आँसू थे और श्याम की आँखों में बिछड़ने का डर।

हमेशा की तरह अपने सपनों के गलियारों से होते हुए वे दोनों मुकद्दर के उस चौक पर खड़े थे जहाँ से उनके रास्ते अलग होने की कगार पर थे। फर्क इस बात का था कि राधिका का चेहरा और उसकी आँखें दोनों यकीन से भरे थे। श्याम को कुछ समझ नहीं आ रहा था। वो राधिका के हाथों में हाथ डाले चल रहा था, वैसे ही जैसे वो अपने ख्वाबों में करता था। राधिका भी चहकती महकती उस हर लम्हें को अपने साड़ी के आँचल में समेटे जा रही थी।

"काश.... हमेशा के लिए ऐसा ही रहे। न तुम कहीं जाओ न मैं तुम्हे छोड़ूँ",

राधिका ने श्याम की आँख देखकर कहा। श्याम के चेहरे पर कभी-कभी आने वाली मुस्कराहट थी। राधिका अपनी बातें किए जा रही थी और श्याम चुपचाप उसे सुन रहा था। राधिका का इस तरह से चहकना उसे बहुत पसंद था।

शाम ढलने को थी। अचानक रास्ते में एक सफेद गुलाब देखकर राधिका रुक गयी और सोचने लगी, "यही तो वो फूल है जिससे हमारे रिश्ते की शुरुआत हुई थी और आज... इसका और हमारे रिश्ते, दोनों का रंग बदल चुका है। न अब इस फूल में खुशबू न हमारे रिश्ते में महक... फिर भी दोनों साथ हैं।"

राधिका की बातों में श्याम इतना खो गया कि उसे पता भी न चला कि वो उससे काफी आगे निकल आया है। पीछे पलटकर देखा तो राधिका वहां नहीं थी। वो परेशान होकर पीछे दौड़ा, लेकिन वहां कोई न था... न कोई फूल और न राधिका। पौधों की पत्तियां ज़मीन पर बिखरी पड़ी थी, डाले सूख चुकी थी और मिट्टी धूल बनकर उड़ रही थी। वो कुछ समझ नहीं पा रहा था कि तभी उसे, थोड़ी दूरी पर, एक जाती हुई परछाई दिखाई पड़ी। वो चिल्लाना चाह रहा था, उसे रोकना चाह रहा था, लेकिन उसके गले से कोई आवाज़ नहीं निकल रही थी। वो उसे जाते हुए सिर्फ देख रहा था.... लाचार होकर।

डरा-सहमा श्याम.... तभी उसकी आँख खुली। सुबह के पांच बज गए थे, सूरज की लालिमा रात के काले रंग को सुर्ख नारंगी एवं नीले रंग से सजा रही थी और खिड़की के बाहर चिड़ियों की चहचहाहट शुरू हो चुकी थी। उसने अपनी दोनों हथेलियों की तरफ देखा और बोला, "..... वो चली गई।"

मैं हारूंगी नहीं

सूरज नेगी
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

हिमालय की बर्फीली वादियों के बीच बसे एक छोटे से गांव में एक बच्ची ने जन्म लिया। उसका नाम रखा गया –"अन्या"।

उसके जन्म से घर में खुशियों की लहर दौड़ गई पर किस्मत की किताब में उसके लिए कुछ और ही लिखा था। बचपन का पहला बड़ा झटका तब लगा जब अन्या के सिर से पिता का साया उठ गया। गरीबी व तानों का बोझ उसके छोटे कंधों पर आ गया। मगर उसी पल उसकी आंखों में पहली बार एक ठोस विश्वास चमका –"मैं हारूंगी नहीं।"

अन्या ने पढ़ाई जारी रखी। रातों की मद्धम रोशनी में किताबों से जूझती, दिन में मेहनत करती और हालात से लड़ती रही। वर्षों के संघर्ष के बाद जब वह डॉक्टर बनी तो यह सिर्फ उसकी अपनी उपलब्धि नहीं थी बल्कि पूरे गांव के लिए गर्व का क्षण था।

परंतु जीवन ने उसे यहीं नहीं रोका। शादी के बाद पति शराब की लत में डूब गए और असमय दुनिया छोड़ गए। दो छोटे बच्चों की मासूम आंखों में सहारे की तलाश देखकर अन्या ने खुद को ढाल बना लिया। उसने हर कठिनाई का सामना किया, बच्चों को पढ़ाया-लिखाया और खड़ा किया। आज दोनों बच्चे सरकारी नौकरी में है और समाज में अपनी पहचान रखते हैं।

बच्चों की परवरिश के साथ ही अन्या ने गांव के लिए भी अपने दिल के दरवाज़े खोले। उसने अपने घर को ही एक छोटा-सा क्लिनिक बना दिया, जहां गरीब किसान, मजदूर, महिलाएं और बुजुर्ग इलाज पाने आते। सुबह से देर रात तक दरवाज़े पर भीड़ लगी रहती और अन्या हर मरीज़ को धैर्य से सुनती, अपनापन और सहानुभूति से दवा देती। धीरे-धीरे लोग उसे सिर्फ डॉक्टर नहीं बल्कि सेविका मानने लगे।

लेकिन उसके जीवन का सबसे कठिन मोड़ तब आया जब 65 वर्ष की उम्र में उसे अपने ही बेटे से उपेक्षा और कठोरता सहनी पड़ी। जिस बेटे के लिए उसने सब कुछ समर्पित किया, उसी से दूरी और तिरस्कार मिलना, यह किसी भी मां के लिए असहनीय पीड़ा थी।

फिर भी अन्या टूटी नहीं। उसने भगवान की ओर रुख किया और जनसेवा को ही अपना सहारा बना लिया। सत्संग और सेवा उसके जीवन का आधार बन गए।

आज भी उम्र के इस पड़ाव पर जब उसके माथे पर झुर्रियां गहरी हो चुकी है, उसकी आंखों में अब भी वही चमक है। क्लिनिक के दरवाज़े पर बैठी वह अब भी मुस्कुराकर लोगों का इलाज करती है। उसके भीतर अब भी वही बच्ची ज़िंदा है जिसने पिता को खोने के बाद मन ही मन कहा था - "मैं हारूंगी नहीं।"

अन्या की कहानी हमें सिखाती है कि –"दुःख चाहे कितना भी गहरा क्यों न हो यदि विश्वास की ज्योति जलाए रखी जाए तो सबसे अंधेरी रात भी एक नए प्रभात में बदल जाती है।"

सोशल मीडिया का बढ़ता बुरा प्रभाव

संदीप
लेखाकार

सोशल मीडिया - आइये सबसे पहले यह जानने की कोशिश करते हैं कि आखिरकार ये सोशल मीडिया क्या है जो आज के जीवन का विषय बन गया है जिसका उपयोग भी हमारे जीवन का आधार बन गया है।

इसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनो ही प्रभाव है।

सोशल मीडिया आज के युग की एक तकनीकी जीवन शैली बन चुका है जैसे कि हम २०२५ से ३० साल पीछे जाएं तो उस समय टेलिफोन, डाक-तार का उपयोग होता था। टेलीफोन के द्वारा सिर्फ बातचीत होती थी एस.एम.एस. का जमाना नहीं था। डाकतार द्वारा ही एक दूसरे को संदेश पहुंचाए जाते थे और तो और घर-घर फोन भी नहीं होता था। (एस.टी.डी., आई.एस.डी.) टेलीफोन बूथ का ही उपयोग होता था। लोग लम्बी-२ कतारों में लगकर अपनी बारी का इंतजार करते थे। लोग मोबाईल फ़ोन के बारे में जानने लगे तब धीरे-धीरे समय के साथ परिवर्तन आया। अब (एस.टी.डी बूथ पर) भीड़ कम जमा होने लगी है। सबसे पहले मोबाइल Nokia, Motorola जैसी बड़ी कंपनियों का नाम इस युग मे प्रचलित हुआ जिनके द्वारा अब हम घर बैठ कर अपनी बात एक-दूसरे तक पहुँचाने लगे और-सरल मोबाइल संदेश भी लिखकर अपनी बात दूसरों को बताने लगे। धीरे-धीरे टेलीफोन की जगह अब मोबाइल ले चुका था। उस समय हर दूसरे तीसरे घर में एक मोबाइल होता था पर बड़ी कंपनियां नयी-नयी तकनीकों का इस्तेमाल कर मोबाइलो में अलग-अलग प्रकार की सुविधाएं देने लग गयी। पहले इसके द्वारा सिर्फ बातचीत और संदेश लिखकर ही भेजे जाते थे अब नई तकनीकों का इस्तेमाल करके जैसे e-mail, फोटोग्राफी की सुविधा दी जाने लगी, पहले लोगो को Computer Lab जाकर इंटरनेट के द्वारा फॉर्म- भरना पड़ता था, लेकिन अब यह सुविधा हमारे (mobile) फ़ोन में मिलने लग गई।

तत्पश्चात (Yahoo.com) को पीछे कर (Google) ने अपनी पहचान बनाई। यही नहीं (Youtube) Insta, Tiktok, न जाने भिन्न-२ प्रकार की APP जिन्होंने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, इन सब ने हमारे जीवन की जो शैली है उसे बहुत ही बुरे तरीके से प्रभावित किया है। इसने हमारी आने वाली नई पीढियों को अत्याधिक प्रभावित किया है। इसका बुरा प्रभाव हमारी पीढ़ी को बुरी तरह से प्रभावित कर रहा है। इसके अत्याधिक उपयोग से चिंता, अवसाद, शरीर की छवि को लेकर साइबर- बुलिंग का सामना करना और सोशल मीडिया की लत जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं।

बच्चों के मस्तिष्क पर बुरी तरह से दुष्प्रभाव पड़ रहे हैं! बच्चों का communication एक दूसरे सें दूर हो रहा है। वे अपनी ही एक अलग दुनिया बना लेते हैं। ऐसी स्थिति आज के बच्चों के लिए बहुत ही चिंताजनक है, वे अपने सबसे करीबी माता-पिता से भी बात करना पसंद नहीं कर रहे जो बहुत ही दुःख की बात है।

गलत सामाजिक तुलना :- दूसरों को (परफेक्ट)समझ कर बच्चे अपने आपको जिंदगी से असंतुष्ट महसूस करने लगते है। सोशल मीडिया और तकनीकी का दुरुपयोग जिसे डिजिटल दुरुपयोग भी कहा जाता है। जिसमें टेक्स्टिंग और सोशल नेटवर्किंग जैसी तकनीक का इस्तेमाल किसी साथी को धमकाने, परेशान करने, पीछा करने या डराने के लिए किया जाता है।

बुरी आदत और समय का दुरुपयोग-बच्चे सोशल मीडिया की लत का शिकार हो सकते हैं इस पर अपना बहुत अधिक समय बिताते हैं। जिससे उनकी नींद और अन्य शारीरिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

हानिकारक सामग्री - बच्चों को अश्लील, ग्राफिक या जानकारी वाली सामग्री तक पहुंच मिल सकती है, जो उनकी सोच को काफी हद तक प्रभावित करती है ।

सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभावः-

सोशल मीडिया समान रूचि वालों से जुड़ने और एक सहायक समुदाय खोजने का अवसर प्रदान करता है, खासकर उन बच्चों के लिए जिन्हें अपने वास्तविक जीवन में यह समुदाय नहीं मिल पाता। यह छात्रों को सकारात्मकता दिखाने, कौशल विकसित करने और यहां तक कि कैरियर के नए अवसरों में रूचि उत्पन्न करने की क्षमता रखता है।

सोशल लाभ - सोशल मीडिया शैक्षिक संसाधनों तक पहुँचने और खुद से निर्देशित, विचारों को रखने में मदद करता है।

सूचना और समाचार- आमजन सोशल मीडिया के माध्यम से दुनिया भर की खबरों, और महत्वपूर्ण जानकारी तक जल्दी पहुंच सकते हैं।

ज्ञान और सीखने के अवसर - छात्र और पेशेवर सोशल मीडिया का उपयोग ज्ञान बढ़ाने और सीखने में मदद करता है।

वैश्विक समझ- यह बच्चों को विविध लोगों से जुडने और मौखिक मुद्दों की बेहतर समझ विकसित करने में मदद करता है। मीडिया बच्चों के लिए खुद के भावनात्मक और सामाजिक विकास को आकार देने में अपनी अहम् भूमिका अदा करता है।

निष्कर्ष:-

सोशल मीडिया ने हमारे जीवन को कई तरह से बदल दिया है। यह सूचना और संवाद का एक सशक्त माध्यम बन गया है जिसने दुनिया को एक छोटे से गाँव की तरह बना दिया है। इसके माध्यम से हम अपने विचार, भावनाएं और जानकारी तुरंत साझा कर सकते हैं।

हालांकि, सोशल मीडिया के सकारात्मक पहलू जैसे कि संपर्क बनाना, शिक्षा और जागरूकता फैलाना महत्वपूर्ण हैं, लेकिन इसके नकारात्मक पहलू भी कम नहीं हैं। अत्यधिक उपयोग से मानसिक तनाव, गोपनीयता की चिंता, गलत जानकारी का प्रसार, और समय की बर्बादी जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

इसलिए, सोशल मीडिया का सही और संतुलित उपयोग ही हमें इसके लाभ दिला सकता है और इसके दुष्प्रभावों से बचा सकता है।

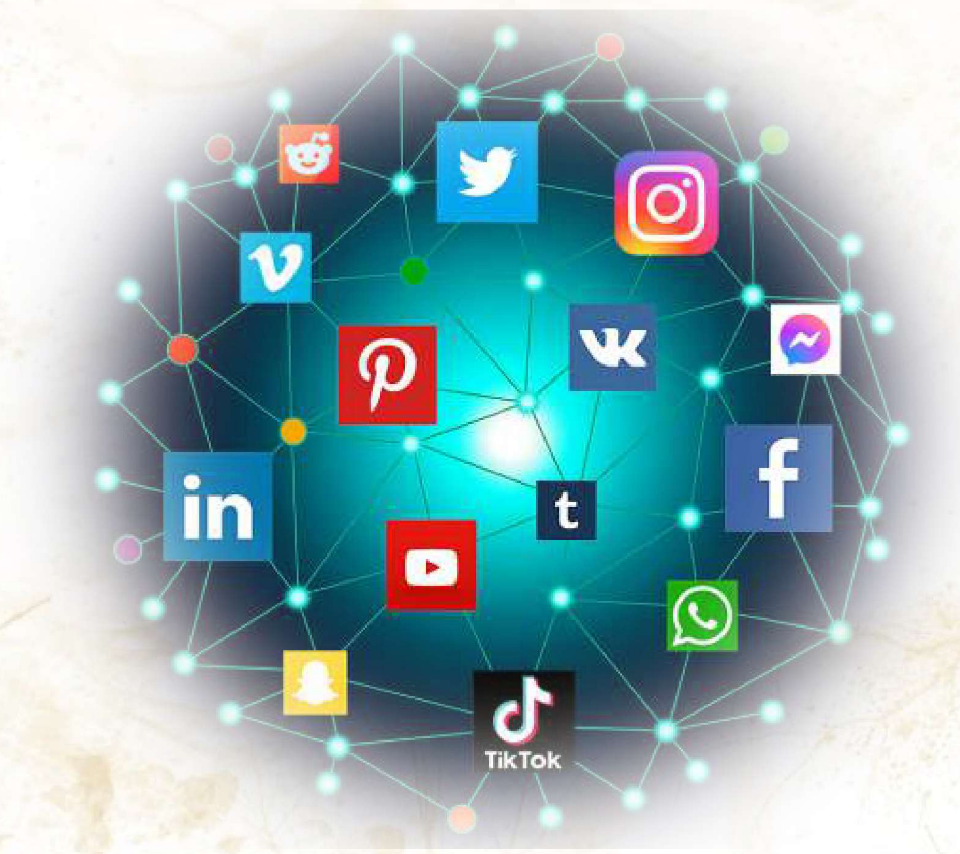

मेरी कर्नाटक यात्रा

अनुराधा सूद
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

वर्ष 2023 के फरवरी मास के अंतिम दिनों में एक सप्ताह का कार्यक्रम बनाकर, मेरा परिवार-सहित कर्नाटक राज्य के दक्षिण कन्नड़ जिले के सुल्लिया नामक गाँव में एक मित्र परिवार के घर एक विवाह-समारोह में जाना हुआ। मित्र परिवार ने विवाह-समारोह उपरांत, आस-पास के क्षेत्र घूमने-फिरने के लिए अपना निजी वाहन हमें दे दिया, जिस कारण अपनी कर्नाटक यात्रा के दौरान हमें कुछ धार्मिक स्थलों-मुरुदेश्वर, गोकर्णा, उडुपी, श्रृंगेरी मठ, धर्मस्थला आदि के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस कड़ी में यहाँ मैं केवल मुरुदेश्वर व उडुपी की उल्लेखनीय यात्राओं का वर्णन करुंगी।

मुरुदेश्वर महादेव मंदिर:

कर्नाटक राज्य के सुल्लिया गाँव से तकरीबन 220 किलोमीटर की दूरी पर बसा,उत्तर कन्नड़ जिले के अरब सागर के तट पर स्थित पौराणिक महत्व के एक लोकप्रिय तीर्थ एवं पर्यटन स्थल मुरुदेश्वर में हमारा सर्वप्रथम जाना हुआ। इस स्थान से 165 किमी की दूरी पर निकटतम अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा मैंगलोर है। मुरुदेश्वर घूमने के लिए एक बेहद शांत और प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर स्थान है। यहाँ भारतीय पर्यटकों के अतिरिक्त विदेशी पर्यटक भी बड़ी संख्या में घूमने आते है।आप इस स्थान पर स्कूबा डाइविंग और अन्य जल गतिविधियों का आनंद भी ले सकते है।

मुरुदेश्वर दूर से ही दिखाई देने वाली 123 फुट दुनिया की दूसरी सबसे ऊंची शिव प्रतिमा के लिए भी काफ़ी प्रसिद्ध है। इस विशाल भगवान शिव की प्रतिमा और शिव को समर्पित मुरुदेश्वर महादेव मंदिर व इस के परिसर का निर्माण कार्य एक स्थानीय व्यवसायी और समाजसेवी राम नागप्पा शेट्टी द्वारा करवाया गया है। शिव प्रतिमा को इस तरह डिजाइन किया गया है कि इस पर सीधे सूर्य की रोशनी पड़ने से यह चमकदार दिखाई देती है।

मुरुदेश्वर का मुख्य महादेव मंदिर एक कंदुका नामक विशाल पहाड़ी पर फैला हुआ और तीन तरफ से अरब सागर से घिरा हुआ है। मंदिर की वास्तुकला दक्षिण भारतीय द्रविड़ शैली में है। मुरुदेश्वर मंदिर का 20 मंजिला ऊंचा राज गोपुरम देखने योग्य है जिसके प्रवेश द्वार के दोनों ओर कंक्रीट के बने दो विशालकाय हाथी इसकी ओर जाने वाली सीढ़ियों पर पहरा देते जान पड़ते हैं। महाशिवरात्रि और कार्तिक पूर्णिमा के

त्योहार मनाने बड़ी संख्या में लोग रात-दिन मंदिर में एकत्रित होते हैं।

यहाँ शिव और शनि देवता के मंदिर हैं। मंदिर के पास ही एक पार्क, कैफ़े तथा गेस्ट हाउस बना है। यहाँ पार्क में कई भव्य मूर्त्तियां बनाई गई हैं जिनमें से एक रथ पर अर्जुन के सारथी बने भगवान श्री कृष्ण को गीता का उपदेश देते हुए दिखाया गया है इसके अतिरिक्त सूर्य रथ,गणेश आदि की अप्रतिम मूर्तियां तथा माँ गंगा उतरती हुई पहाड़ी के चारों ओर खुदी हुई हैं। यहाँ कुछ फ़ूड स्टॉल और ढाबे भी हैं जहाँ आप स्थानीय व्यंजनों का आनंद ले सकते हैं।

मुरुदेश्वर का पौराणिक महत्व

पौराणिक कथाओं के अनुसार, रावण अमरता और अजेयता के लिए भगवान शिव का दिव्य आत्म-लिंग प्राप्त करना चाहता था, इसलिए उसने घोर शिव-साधना की। उसकी पूजा से प्रसन्न होकर, भगवान शिव ने उसे साक्षात दर्शन दिए और उससे पूछा कि वह क्या चाहता है। रावण ने शिव से आत्म-लिंग माँगा, जिसे शिव ने इस शर्त पर दिया कि लंका पहुंचने से पहले वह इस लिंग को कहीं भी जमीन पर नहीं रखेगा अन्यथा इसे हिलाना असंभव हो जाएगा। शिव से आत्म-लिंग प्राप्त करने के बाद, रावण वापस लंका की ओर चल पड़ा। भगवान विष्णु को लगा कि अमरता प्राप्त करके रावण अभिमानी और अत्याचारी हो सकता है इसलिए उन्होंने गणेश जी को अपना संशय जाहिर किया और इसका निवारण माँगा। गणेश जी को पता था कि रावण भगवान शिव का अनन्य भक्त है तथा वह हर शाम शिव भगवान का संध्या-अनुष्ठान अवश्य करता है, अत: विष्णु और गणेश जी ने मिलकर एक योजना बनाई।

रावण जैसे ही अरब सागर के किनारे दो नदियों के बीच स्थित गोकर्ण नामक स्थान के निकट पहुंचा, विष्णु ने माया रच सूर्य को छिपाकर शाम कर दी। रावण को अब अपना संध्या अनुष्ठान करना था, लेकिन आत्म-लिंग हाथ में होने के कारण, वह अपना अनुष्ठान करने बारे चिंतित था उसी समय गणेश जी एक गो-पालक बालक के वेश में वहाँ आए। रावण ने बालक से अनुष्ठान करने तक आत्म-लिंग को अपने पास रखने का अनुरोध किया तथा उसे जमीन पर न रखने के लिए अनुरोध किया। बालक ने कहा कि वह रावण को तीन बार बुलाएगा और यदि रावण उस समय के भीतर वापस नहीं आया तो वह आत्म-लिंग को जमीन पर रख देगा। जैसे ही रावण अपना संध्या अनुष्ठान करने गया, पीछे से विष्णु ने फिर अपनी माया से सूर्य का आवरण हटा दिया।

गणेश जी ने तीन बार तेजी से रावण को पुकारा, लेकिन वह निश्चित समय में नहीं आ सका, भगवान गणेश ने आत्मलिंग को जमीन पर रख दिया। रावण अपना संध्या-अनुष्ठान करके वापस आया तो आत्म-लिंग को जमीन पर रखा हुआ पाया, उसे अपने साथ किए गए छल का अहसास हो गया। रावण ने आत्म-

लिंग को उखाड़ने की बहुत कोशिश की, जिसके कारण उसके बल लगाने से आत्म-लिंग के टुकड़े होकर बिखर गए। कहा जाता है कि एक टुकड़ा सुरथकल में गिरा, जहां सदाशिव मंदिर बना है और दूसरा मुरुदेश्वर में जिसे मृदेश्वर लिंग कहा जाता है। जिसके कारण यहाँ का नाम मृदेश्वर पड़ा जोकि बाद में मुरुदेश्वर हो गया। माना जाता है कि रावण ने आत्म-लिंग को ढकने वाले कपड़े को भी इसी मुरुदेश्वर में कंदुका-गिरि नामक पहाड़ी पर फेंक दिया था। शिव पुराण में इस कथा का विस्तार से वर्णन किया गया है।

मुरुदेश्वर मंदिर में, एक स्थापित लिंग जमीन से लगभग दो फीट नीचे गर्भगृह में स्थित है, जिसे रावण को दिए गए आत्मलिंग का एक अंश माना जाता है। भक्त गर्भगृह की दहलीज के सामने खड़े होकर इसके दर्शन कर सकते हैं, तेल के दीपक से लिंग को रोशन किया जाता है। सभी भक्तों के लिए गर्भगृह में प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। पहाड़ी के तल पर बने रामेश्वरम लिंगम में भक्त बिना किसी पुजारी के स्वयं अनुष्ठान कर सकते हैं।इसके पास ही एक शनिश्वर मंदिर भी बना है।

गोकर्ण का महाबलेश्वर मंदिर:

मुरुदेश्वर महादेव के दर्शन करने और आस-पास के स्थान घूमने के बाद, हम यहाँ से लगभग 80 किलोमीटर की दूरी पर स्थित, कर्नाटक राज्य के उत्तर कन्नड़ जिले के गोकर्ण शहर की ओर चल पड़े, जहाँ तक पहुँचते हुए हमें शाम हो गई थी। कर्नाटक का यह स्थान शिव के सबसे पवित्र स्थलों में से एक है और इसका उल्लेख कई पुराणों, रामायण और महाभारत में मिलता है। पौराणिक हिंदू मंदिर में दर्शन करने व यहाँ के पवित्र माने जाने वाले मुक्ति स्थल में कई हिंदू अपने दिवंगत लोगों का अंतिम संस्कार करने आते हैं। यहाँ आने से पहले ही हमने एक होटल के दो कमरे ऑनलाइन बुक करवा लिए थे।

गोकर्ण शहर हरे-भरे वातावरण से भरपूर, गंगावल्ली और अगनाशिनी नदियों के बीच तथा अरब सागर के तट के पास ही बसा है, जोकि चौथी शताब्दी में स्थापित, द्रविड़ शैली में निर्मित, एक हिन्दू मंदिर महाबलेश्वर के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ से पणजी, गोवा की दूरी लगभग 95 मील दूर ही रह जाती है।गोकर्ण के मंदिर से जुड़ी एक कथानुसार रावण की माँ, भगवान शिव की कट्टर भक्त थी।अपने बेटे की समृद्धि के लिए शिव-लिंग की पूजा करते देख, स्वर्ग के देवता इंद्र ने ईर्ष्यावश शिव-लिंग को चुरा कर समुद्र में फेंक दिया, जिससे रावण की माँ की पूजा बाधित हो गई। तब रावण ने अपनी मां से वादा किया कि कैलाश पर्वत पर जाएगा और शिव की पूजा के लिए मुख्य आत्मलिंग को ही लाएगा। तब रावण ने कैलाश पर्वत पर जाकर कठोर तपस्या की और अपना सिर काट दिया और अपनी त्वचा और आंतों से धागे खींचकर एक वीणा बनाई। भगवान शिव उसकी भक्ति से प्रसन्न हो उसके सामने प्रकट हुए और एक इच्छा व्यक्त करने को कहा। रावण ने आत्म-लिंग देने का अनुरोध किया। भगवान शिव इसे सशर्त देने पर राजी हुए कि यदि इसे कभी भी जमीन पर रखा, तो यह उसी स्थान पर जड़वत हो जाएगा। शेष घटना का वर्णन ऊपर पहले से ही

किया गया है।

एक किंवदंती अनुसार जब गणेश जी रावण को धोखा देकर अपनी गायों के साथ गायब हो गए, तब रावण ने एकमात्र बची भूमिगत हो रही गाय का पीछा किया। कान के अतिरिक्त, गाय का सारा शरीर जमीन के नीचे गायब हो गया था, वह कान को ही पकड़ पाया। जिसके कारण ही इस स्थान को "गोकर्ण" नाम दिया गया। तब, रावण ने शिव लिंग को उठाने की बहुत कोशिश की लेकिन वह इसके स्थिर होने के कारण असफल रहा, जिसके कारण ही भगवान शिव के इस आत्मलिंग को "महाबलेश्वर" (सर्वशक्तिमान) नाम दिया गया। इसके अतिरिक्त देवी भद्रकाली का मंदिर भी गोकर्ण का एक अभिन्न दिव्य पूजा स्थल हैं।

गोकर्ण में बहुत सारे होम-स्टे और होटल है। अपने होटल पर पहुँचने पर हमने इसे मुख्य मंदिर और समुद्र तट से थोड़ा दूर पाया, जबकि इन दोनों के समीप भी बहुत सारे होटल उपलब्ध थे। हमने अपने बुक करवाए हुए कमरे छोड़ कर, मंदिर और समुद्र तट के समीप के होटल के दो कमरे ले लिए। अब तक रात घिर आई थी, अत: हमने होटल में अपना सामान रख, सुबह नहा-धोकर ही मंदिर जाने का निर्णय लिया तथा अनंत समुद्र की लहरों का आनंद लेने चल पड़े।

रात के समय भी खूब रौनक़ और चहल-पहल थी। देशी नागरिकों से अधिक यहाँ विदेशी पर्यटक नज़र आ रहे थे। ऐसा लग रहा था मानों इस समय सभी पर्यटक समुद्र तट पर ही मौजूद थे, यहाँ एक अद्‌भुत और मन को शांति और सुकून देने वाला वातावरण था। समुद्र तट के पास काफ़ी सारे खाने-पीने के ढाबे, रेस्टोरेंट और शॉपिंग की छोटी-छोटी दुकानें थी। हमने वहीं एक रेस्टोरेंट में खाना खाया और अपने प्रियजनों के लिए कुछ उपहार खरीदे। रात के बारह बजे तक भी वहाँ ठीक भीड़-भाड़ थी, ऐसा लग रहा था कि शायद यहाँ लोग रात को सोते ही ना हो, हम एक बजे के करीब अपने कमरों में लौट आए।

सुबह हम महाबलेश्वर मंदिर दर्शन करने पहुँचे। गैर-भारतीय (पश्चिमी) मूल के हिंदुओं सहित विदेशियों को मंदिर के गर्भगृह में प्रवेश करने और शिवलिंग देखने की अनुमति नहीं है। यह मंदिर भगवान शिव के अवतार भगवान महाबलेश्वर को समर्पित है। गोकर्ण महाबलेश्वर मंदिर में स्थापित भगवान शिव का आत्मलिंग काशी विश्वनाथ मंदिर में भगवान शिव के ज्योतिर्लिंग के समान ही पवित्र माना जाता है। किंवदंती के अनुसार, गोकर्ण मंदिर में प्रतिष्ठित आत्मलिंग, मुख्य लिंग है जिसे भगवान विष्णु ने रावण को रोकने के लिए गोकर्ण में स्थापित करवा दिया था तथा जिसे रावण हिला नहीं पाया था।

गोकर्ण मंदिर में प्रवेश हेतु परिधान संबंधी कुछ प्रतिबंध है। पुरुषों का धोती अथवा लुंगी पहनना आवश्क है तथा शरीर के ऊपरी भाग में वस्त्र धारण करना वर्जित है यानि कि पुरुष टी-शर्ट, कमीज़ अथवा बनियान कुछ भी नहीं पहन सकते तथा महिलाओं के लिए परिधानों में केवल सलवार-सूट अथवा साड़ी की ही अनुमति है। मंदिर के अंदर शोरगुल करना मना है। प्रबंधन समिति की अनुमति से आप कुछ स्थानों की

फ़ोटो ले सकते है। मंदिर के प्रवेश द्वार के दोनों ओर स्थानीय महिलाएं भगवान को अर्पित करने हेतु बहुत ही सुंदर फूलों की टोकरियां अथवा पत्तों पर पुष्प-गुच्छ सजाकर बेच रही थी। आसपास की सभी दुकानों पर धोतियां/ लुंगियां और ऐसे स्थानों पर बेचे जाने वाले सामानों की भरमार थी। हमने फूलों की एक टोकरी खरीदी और मंदिर परिसर में प्रवेश कर गए।

मंदिर का प्रशासनिक प्रभार भारत के माननीय सर्वोच्च न्यायालय के एक सेवानिवृत्त न्यायाधीश की अध्यक्षता में एक समिति के पास था।मंदिर न्यास समिति की दुकान से हमने तीन धोतियां खरीदी और उनको पहन कर मुख्य मंदिर में दर्शन करने हेतु दाखिल हो गए।मंदिर की संरचना द्रविड़ शैली की है। मंदिर में आत्मलिंग एक वर्गाकार शालिग्राम पीठ पर स्थापित है। चौकी के केंद्र में एक छोटा सा छेद है जहाँ से भक्त आत्मलिंग के शीर्ष को देख सकते हैं। यह लिंग दिखाई नहीं देता है लेकिन पुजारी लिंग को छूने की अनुमति देते हैं।

धार्मिक परंपराएं

शिवरात्रि महोत्सव समारोह के दौरान आयोजित रथयात्रा में बहुत बड़ी संख्या में तीर्थयात्री मंदिर में आते हैं। शिव और अन्य देवताओं की तस्वीरें एक रथ पर स्थापित की जाती हैं, जिसे भक्त ढोल बैंड के साथ पूरे शहर में श्रद्धापूर्वक घुमाते हैं। रथ यात्रा मुख्य बाजार के अंत में स्थित श्री महागणपति मंदिर से शुरू होती है, जो महाबलेश्वर मंदिर से कुछ गज की दूरी पर ही है।

अधिकांश भक्त, धार्मिक प्रथाओं अनुसार यहाँ अपना सिर मुंडवाते, उपवास करते और फिर मंदिर के सामने अरब सागर में स्नान करते है। फिर वे बालक गणेश के सम्मान में श्री महागणपति मंदिर में स्थापित भगवान गणेश की पूजा करते हैं, क्योंकि उन्होंने शिव जी के आत्मलिंग को बचाया था। मंदिर के भीतर गणेश की एक ग्रेनाइट प्रतिमा है, जिसके सिर के शीर्ष पर एक छेद है जिसके बारे में कहा जाता है कि यह रावण द्वारा किए गए हिंसक प्रहार का निशान है। इस मंदिर को "सिद्ध गणपति" के नाम से भी जाना जाता है।इन धार्मिक प्रक्रियाओं का पालन करने के बाद, भक्त दर्शन के लिए महाबलेश्वर के मुख्य मंदिर में जाते हैं।

इस सुंदर और पवित्र तीर्थ-स्थल की यात्रा के बाद मैंने स्वयं को सकारात्मकता से भरपूर तथा उस अनंत से जुड़ा पाया जिसकी खोज में हम भटकते रहते हैं। हिमाचल तो देव-भूमि है ही, लेकिन कर्नाटक में भी पौराणिक महत्व के आप को असंख्य स्थान मिलेगे, जिन में कुछ का विस्तारपूर्वक वर्णन, मै अपनी आगामी रचना में करुंगी।

आधुनिक तकनीकी-फायदे व नुकसान

संजय शर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

इस बात में कोई दो राय नहीं कि आधुनिक तकनीक से मानव जीवन सरल हुआ है। उदाहरण के तौर पर आज हमें यदि अपने किसी रिश्तेदार से बात करनी है जो कि कोसों दूर बैठा है तो हम मोबाइल फोन से उनसे तुरंत बात कर सकते हैं। उनका कुशलक्षेम पूछ सकते हैं। इसी तरह यदि हमें अपने उपयोग हेतु कोई जानकारी प्राप्त करनी है तो हम इन्टरनेट के माध्यम से तुरंत उस जानकारी को प्राप्त कर सकते हैं। आजकल बहुत सारी जानकारी व सुविधाएं तुरंत ऑनलाइन उपलब्ध हो जाती हैं। यह तो जगजाहिर कि अति किसी भी चीज़ की सही नहीं होती। आजकल तकरीबन प्रत्येक व्यक्ति के पास मोबाइल फ़ोन है। आधुनिकता के इस युग में मानव तकनीकी के मकड़जाल में इस कदर फंस चुका है कि उसके पास हमेशा समय का अभाव रहता है। आज के समय में चाहे बच्चे हो या वयस्क, अधिकांश अपना कीमती वक्त मोबाइल फ़ोन पर व्यर्थ की बातें देखने में जाया करते हैं।इसका मुख्य कारण सोशल मीडिया के विभिन्न प्रारूप हैं जैसे कि यू-ट्यूब, फेसबुक, इन्स्टाग्राम इत्यादि है। आज के समय में नई पीढ़ी पर मोबाइल का दुष्प्रभाव बहुत ज्यादा पड़ रहा है।छोटे-छोटे बच्चे जिनकी खेलने कूदने की उम्र है, वे मोबाइल फ़ोन में इस कदर खो जातें हैं कि खेलना-कूदना ही भूल जाते हैं जिसके परिणामस्वरूप उनका मानसिक व शारीरिक विकास बाधित हो रहा है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में भी मानव ने अतुलनीय एवं अभूतपूर्व उपलब्धि हासिल की है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विभिन्न प्रारूप जैसे चैट जीपीटी, गूगल जैमिनी एवं अन्य द्वारा मानव जीवन सरल हुआ है। चाहे विज्ञान का क्षेत्र हो, दर्शन शास्त्र हो या अन्य कोई दूसरा विषय हो, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग से जटिल से जटिल प्रश्नों के उत्तर आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। इसमें कोई दो राय नहीं है कि चाहे दूरसंचार के क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास हो या कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में कोई नई खोज हो, हमें अन्य देशों की तरह तकनीकी के विकास में अधिकाधिक हिस्सा लेना चाहिए। लेकिन हमें इस बात की तरफ भी ध्यान देना होगा कि हम किस हद तक आधुनिक तकनीक को मानव जीवन में हस्तक्षेप की मंजूरी देते हैं। आधुनिक तकनीक से मानव जीवन सरल बनाना एक अलग बात है परंतु इस पर अति निर्भरता मानव जीवन के लिए विनाशकारी साबित हो सकती है। उदाहरणार्थ : कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर अत्यधिक निर्भरता मानव की सोचने समझने की क्षमता कम कर सकती है।

आज के युग में आधुनिक तकनीक का बड़ा महत्व है। मानव जीवन का कोई भी हिस्सा आधुनिक तकनीक से अछूता नहीं रहा है। हमें भी अन्य देशों की तरह इस आधुनिक तकनीकी में बराबर का हिस्सेदार

होना चाहिए परन्तु हमें इस बात की ओर भी ध्यान देने की आवश्यकता है कि इन्टरनेट व कृत्रिम बुद्धिमता का संतुलित उपयोग किया जाए ताकि मानव जीवन पर उसका दुष्प्रभाव न पड़े। इसके लिए सरकार को इससे सम्बंधित कड़े नियम कानून पारित करने की आवश्यकता है ताकि असामाजिक तत्व आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल आमजन के विरुद्ध न कर सके। अंतत : यह बात आधुनिक तकनीक के बारे में अपरिहार्य है कि इसका सिर्फ एक ही लक्ष्य होना चाहिए : सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय।

हमारे जीवन में व्यायाम और योग का महत्व

मोहित
डी.ई.ओ.

व्यायाम या शारीरिक स्वास्थ्य आजकल की तेज और व्यस्त जीवनशैली में बेहद महत्वपूर्ण बन गया है। आज के परिवेश में बढ़ते तनाव, अनियमित खाना और कम शारीरिक गतिविधियों के कारण लोग कई स्वास्थ्य समस्याओं का सामना कर रहे हैं। ऐसे में व्यायाम को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाना बहुत आवश्यक है। व्यायाम से हम अपने शरीर को मजबूत और स्वस्थ बना सकते हैं।

व्यायाम (फिटनेस) के लिए टिप्स

सबसे पहले लक्ष्य तय करें कि हमें फिटनेस को लेकर क्या हासिल करना है, वजन कम करना है, मांसपेशियां बनानी हैं या शारीरिक क्षमता बढ़ानी है और इसके साथ स्वस्थ रहना है।

व्यायाम और योग के साथ–साथ सही खाना भी जरूरी है ताजे फल, सब्जियां और कम शक्कर वाला खाना अपनी डाइट में शामिल करें और निरंतर पानी पीते रहें, जिससे विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने में मदद मिलती है।

व्यायाम के विभिन्न प्रकार हैंः

जैसे दौड़ना, तैरना व साइकिल चलाना हृदय की सेहत को बेहतर बनाते हैं।

वेट ट्रेनिंग से मांसपेशियां मजबूत होती है।

फ्लेक्सिबिलिटी एक्सरसाइज जैसे योग और स्ट्रेचिंग शरीर के लचीलेपन और संतुलन को बेहतर करता है।

व्यायाम के लाभ

व्यायाम शारीरिक फिटनेस के लिए बुनियादी है। नियमित व्यायाम से शरीर के सभी अंगों को मजबूती मिलती है और यह मांसपेशियों को टोन करता है। इससे हृदय और फेफड़े बेहतर तरीके से काम करते हैं, रक्त संचार बेहतर होता है और सहनशक्ति में वृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त व्यायाम से मस्तिष्क में एंडोर्फिन नामक हार्मोन का स्राव होता है जो मूड को अच्छा करता है और मानसिक तनाव को कम करता है।

खेल का महत्व

खेल मे मनोरंजन के साथ-साथ शारीरिक और मानसिक फिटनेस को बढ़ावा देने का एक बेहतरीन तरीका है। खेलों में भाग लेने से टीमवर्क, क्षमता, आत्मविश्वास और प्रतिस्पर्धात्मक भावना जैसे गुण विकसित होते हैं। कुछ खेलों जैसे क्रिकेट, फुटबॉल, बैडमिंटन और टेनिस में शारीरिक सहनशक्ति, गति और लचीलेपन की आवश्यकता होती है जो शरीर को फिट रखने में मदद करते हैं जिससे व्यक्ति को ताजगी का अनुभव होता है।

योग का महत्व

योग एक प्राचीन भारतीय पद्धति है जो शारीरिक, मानसिक और आत्मिक स्वास्थय को संतुलित करती है। योग में शारीरिक आसन, प्राणायाम और ध्यान की विधियां शामिल होती हैं। यह न केवल शरीर को लचीला और मजबूत बनाता है बल्कि मानसिक शांति और संतुलन भी प्रदान करता है।

कुछ प्रमुख योग आसन जैसे ताड़ासन, वृक्षासन, भुजंगासन और शवासन शारीरिक स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभकारी हैं। यह आसन मांसपेशियों को मजबूती देते हैं, हड्डियों को मजबूत करते हैं और शरीर की गति को बढ़ाते हैं। योग से न सिर्फ शरीर में शक्ति आती है बल्कि मानसिक शांति भी मिलती है जिससे तनाव और चिंता में कमी आती है। योग से शांति, ध्यान व एकाग्रता में भी सुधार होता है।

निष्कर्ष

व्यायाम से शारीरिक रूप से मजबूत बनने के साथ-साथ एक लंबी और स्वस्थ जिंदगी पा सकते हैं इसलिए हम सबको आज से ही अपनी दिनचर्या में व्यायाम (फिटनेस) को शामिल करना चाहिए। स्वस्थ शरीर और शांत मन के लिए योग, प्राणायाम और व्यायाम को अपनी आदत बनाना है।

स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन है और व्यायाम व योग उस धन को सहेजने के सबसे अच्छे उपाय हैं।

व्यायाम जीवन का हिस्सा बनाओ, स्वस्थ शरीर पाओ।

निज यात्रा : सोनीपत से शिमला

सुश्री मनीषा
आशुलिपिक

मेरा जन्म हरियाणा के जिला सोनीपत के साथ ही जुड़े गांव नाहरी में हुआ है। हमारा परिवार खेती बाड़ी के व्यवसाय से जुड़ा रहा है। हरियाणा की वो समृद्ध धरा देश में अपनी उपजाऊ व उन्नत कृषि विकास के लिए प्रसिद्ध है। साथ ही यहां के इलाके की खेल कूद में विशेष रूचि होना भी इस राज्य की एक विशिष्टता है।

मेरी प्राथमिक शिक्षा हमारे गांव नाहरी में ही हुई और उच्च शिक्षा पास के गांव भदाना में पूर्ण हुई। दिल्ली के बहुत ही समीप होने के कारण मैंने अपनी स्नातक की डिग्री दिल्ली यूनिवर्सिटी से पूर्ण की।

अब सरकारी नौकरी की प्राप्ति हेतु वो प्रतियोगिता परीक्षाओ की तैयारियों का दौर शुरू हुआ। कुछ समय उपरांत ही, कर्मचारी चयन आयोग द्वारा आयोजित आशुलिपिक परीक्षा प्रतियोगिता में, प्रभु-कृपा और माँ-बाप की दुआओं से मेरी नियुक्ति कार्यालय, प्रधान महालेखाकार (ले.व ह.) हि०प्र०, शिमला में हुई। पूरे परिवार व मेरे लिए यह असीम ख़ुशी का समाचार था। साथ ही कहूँ कि नौकरी की यह ख़ुशी के साथ अब सोनीपत से अति दूर पहाड़ी इलाके शिमला में जाने और स्वयं को स्थापित करने पर कुछ फ़िक्र होना भी कदाचित स्वाभाविक ही था।

शिमला में मेरे कार्य ग्रहण करने के समय मेरे माता-पिता मेरे साथ आये। उन के सानिध्य में ही मेरे शिमला में रहने के लिए निवास का उचित इंतजाम भी हो गया। मैंने प्रथम अनुभाग के रूप में निधि-10 में जॉइन कर लिया। माता-पिता मेरे साथ एक सप्ताह भर रहे। अब इस अवधि तक मेरे विश्वास में कुछ वृद्धि तो हो ही चुकी थी। वैसे माता-पिता के मार्गदर्शन व प्रोत्साहन की आवश्यकता तो जीवन पर्यन्त रहती है।

मुझ को सौंपे गये अनुभाग कार्य के परिमाप व निपटान के लिए मेरे सह-कर्मियों व सहायक लेखा अधिकारी का मुझे वांछित सहयोग मिलता रहा। दिन-ब-दिन अब कार्य निष्पादन के इस परिवेश में मैं सहज अनुभव कर रही थी। एक और बात कहती चलूँ कि स्कूल और कॉलेज अपनी सहपाठियों के साथ वो हास्य विनोद के सहज पल कभी कभार यादो में दस्तक दे जाते। स्कूल और कॉलेज में फुटबॉल व हॉकी मेरा प्रिय खेल रहा था। फुटबॉल कॉलेज टीम में मेरी जर्सी पर नंबर 10 अंकित था। फुटबाल के मशहूर खिलाडी, जैसे ब्राजील के पेले, रोलान्दिनियो, अर्जन्टीना के मारोड़ोना वलियोन मेस्सी सभी नंबर 10 की जर्सी में खेलते थे। साथ ही

सचिन तेंदुलकर भी इसी नंबर 10 की जर्सी में खेले। अब मुझे जब निधि-10 अनुभाग मिला कुछ ख़ुशी और अनन्य सापेक्षता का विचार मेरे मन में पुलकित हुआ, जब कि यह सहज सहयोग ही हो, मन मानने को राजी ना था।

आगामी 02 से 03 महीने में अपने अनुभाग के सहकर्मियों के सतत सहयोग और अधिकारीगण के उचित मार्गदर्शन से मुझे आबंटित कार्य के निपटान में सहजता अनुभव होने लगी थी। मैंने अब खुद भी इस निपटान प्रक्रिया के परिमाप की समीक्षा व मूल्याँकन कर उन्हें समझना शुरू कर दिया था। जिस के फलस्वरूप मेरे आत्मबल व विश्वास में भी अपेक्षाकृत वृद्धि का क्रम जारी था। अनुभाग में कभी-कभी अब दूसरे सहकर्मियों के कार्य में भी मेरे सहयोग करने से मेरी जानकारी और अनुभाग में मेरी निज मौलिक पहचान सी भी होने लगी। कार्य निष्पादन की भी अपनी एक संतुष्टि तो होती ही है। अत: इस क्रम में कुछ ना कुछ काम खोज कर लेना, निज आदत में शुमार हो चला था।

इस के इलावा, मेरे गृह जिला से ही अन्य कर्मी अथवा अधिकारी भी इसी कार्यालय में कार्यरत हैं, जिन से मेल-मिलाप और उन से मिल कर एक विशेष निजता का अहसास होना स्वाभाविक ही था। अब धीरे धीरे, शिमला भी अपने घर जैसा ही तो प्रतीत होने लगा। यहाँ की आबो हवा, प्रदूषण रहित वातावरण और सब से बढ कर अपनी कार्य स्थली और उसका अच्छा माहौल, सच मानिये अब यदि किसी कारण से अवकाश पर सप्ताह भर के लिए सोनीपत रहना पड़ जाये, तो शिमला और अपने अनुभाग व उसका अच्छा माहौल वापसी के लिए मन कुछ आंदोलित करने लगता है। सच मानिये वैसे शिमला का अपना स्वयं-भू आकर्षण भी अद्भुत है, तभी ब्रिटिश काल में अंग्रेजों ने इसे भारत की राजधानी बनाया होगा। और आज भी हजारों सैलानी देश-विदेश से यहाँ भ्रमण पर आते हैं।

माँ की नसीहत

सुश्री सोनिया शर्मा
अतिथि लेखक

अपने माता-पिता की सीख को शिरोधार्य करना अमूमन हमारे सामाजिक परिवेश का अनूठा परिवेश है। मेरा निज मानना है, इस नसीहत को अंगीकार कर लेने से चेतना व आत्म आन्नद के द्वार खुल ही जाते हैं, जीवन उदेश्यपूर्ण व सहज प्रतीत होने लगता है।

हमारा गाँव, सोलन, कंडाघाट के समीप जिला सोलन में बसा है। पहाड़ी इलाका होने के कारण यहाँ की सुन्दरता, आबो-हवा तरोताजा है। हमारे गाँव के बायीं तरफ की धार के पिछले इलाके में घना वन क्षेत्र विद्यमान है जहां पर बाण, चीड आदि के घने पेड़ हैं। इसी के साथ ही वहां पर यद्यपि घनी घास, चारे की व्यापक उपलब्धता रहती थी परन्तु बचपन से ही हमारी माँ ने उस जंगल में कदाचित कभी भी ना जाने की नसीहत दी थी। क्योंकि उस वन क्षेत्र में बाघ, भालू, चीता व अन्य जंगली जानवर पाए जाते थे। अतः उस इलाके में पशुओं – गाय, भेड-बकरियों का जंगली जानवरों द्वारा मारे जाने की खबरे वर्ष में 4-5 बार मिल ही जाती थी। कभी कभार रात को वे जंगली जानवर गाँव से कुत्तों को शिकार कर ले जाते थे। इस लिए इस जंगल की दहशत गांव के आम जनमानस में तो बनी ही रहती थी।

यह घटना साल 2022 के मार्च मास के शुरू की थी। इस ऋतु में सर्दियों की वजह से हरे घास की कमी तो बनी ही रहती है। और इस कमी की आपूर्ति वृक्षों की हरी पत्तियों से पूरी की जाती। उस दिन दोपहर को माँ ने मुझे नजदीक से ही चारा ले आने को कहा। अब मेरे घर से निकलते ही पड़ोस का पालतू कुता जैक भी मेरे साथ चल दिया। जैक के सानिध्य ने शायद मेरी उर्जा व हिम्मत में कुछ इज़ाफा कर दिया अन्यथा हरे चारे की नजदीक ही उपलब्धता ना होने के कारण, मेरे कदम धीरे धीरे धार की दूसरी तरफ घने वन क्षेत्र तक बढ़ चले थे। बस उस जगह हरा घास देखते ही मैंने तेज़ी से हाथ चलाये और दराटी से 20 से 25 मिनट में पर्याप्त घास काट लिया। पर हरे भरे घास की गुणवता और सहज उपलब्धता से मन में एक लालच सा आ गया कि कुछ और ज्यादा काट लेती हूँ।

बस अचानक उन्ही क्षणों में कुछ ऐसा घटा कि जैक ऊपर की तरफ से तेजी से नीचे की और सरपट भाग खड़ा हुआ और उस के पीछे किसी और जानवर के तेज भागने की पदचाप आवाज ने भी मेरे कानों में दस्तक दी। मुझे यह समझते देर ना लगी कि किसी जंगली जानवर ने जैक को शिकार करने के लिए हमला कर दिया है। मेरे रोंगटे खड़े हो गये और निज चेतना भय के आगोश में डूब गयी। मुख से चीख़ निकली और मैं तेज गति से गांव की ओर पागलों की भांति भागी। आज तो मेरी जान पर बन आई थी, मेरी गति भी तो इस असहजता की वजह से बहुत तेज थी। इस कारण मैं एक जगह फिसल कर गिरी भी, पर उठ कर पुनः उसी गति से भागी। अब

गांव की सीमा में जब आ पहुंची तो पहली बार पीछे मुड कर देखा। मैंने आश्चर्य से क्या पाया कि जैक भी पीछे चला आ रहा है। पास आते ही मैंने क्या देखा कि उस की गर्दन से रक्त रिसाव हो रहा है। जैक की गर्दन को निश्चय जंगली जानवर ने दबोचा होगा पर किसी तरह वो बच गया। मैंने उसे पुचकारा और उस की पीठ पर हाथ फेरा। मेरी हालत भी अब कुछ सामान्य सी हो चली थी। घर पहुंच कर मैं चारपाई पर लेट गयी। तभी माँ कमरे में आई व मेरी हालत देख बोली :- "बेटी क्या हो गया तुझे" ? तब मैंने सारा वाकया माँ को सुना दिया।

माँ यह सब सुन एकदम व्यथित सी हो गयी और मुझे निहारते हुए गुस्से में बोली –" सुन बेटा जो बच्चे अपनी माँ की नसीहत नहीं मानते वो धोखा खाते ही खाते हैं। तुझे ऊपर जंगल ना जाने की बार-बार नसीहत दी थी ना मैंने ।" अब माँ की डांट-फटकार सुन मैं भी रोने लगी। माँ ने पानी का गिलास मुझे दिया और मुझ को सींने से लगा कर पुचकारते हुए बोली ,"अगर मेरी बेटी तुझे कुछ हो जाता तो मैं कहाँ से पली पलाई सुन्दर बेटी लाती। "अब माँ भी अपने आंसू पोछ रही थी। अगले ही क्षण माँ ने भगवान की तस्वीर की तरफ हाथ जोड़ , सिर झुका व चुनरी ओढ़ कर भगवान का मेरी रक्षा करने के लिए शुक्रिया किया।

माँ तभी, हरी ओम, हरी ओम बोलती रसोई घर में चली गयी। कुछ ही देर में माहौल व मेरी हालत अब सहज हो चली थी। मैं माँ के पीछे जा कर बोली, माँ उस भाग दौड़ में मुझ से एक गलती हो गयी, घास काटने की दराटी व रस्सी भी वहीं काटे गये घास की 02 गठियों के साथ-साथ जंगल में छूट गये। क्या मै अब उसे ले आऊँ ? माँ ने मुझे निहारा और कहा:-शर्म है कुछ या नहीं! क्या बेच खाई है। इतनी मुश्किल से तू बची आज, पर अभी भी चैन नहीं आया। तब मैंने कहा माँ, रेशु, रिताका और मयंक भाई को मेरे साथ भेज दो 15 मिनट में हम सब वापिस आ जायेंगे माँ। मेरे बार-बार आग्रह करने के बाद माँ ने मयंक को आवाज लगाई और रेशु, रिताका सहित मुझे साथ लेकर वहां से जल्द घास ले आने को कहा। चारों भाई बहन जल्दी-जल्दी चल कर वहां पहुंचे और मैंने और रिताका ने घास की गठिया उठा ली व वापिस आने लगे। मयंक भाई और रेशु हमारे पीछे आ रहे थे।

मैंने और रिताका ने घास की गठिया आंगन में रखी तो रसोई से हलवे की स्वादिष्ट खुशबू ने हमारा स्वागत किया। रितिका को ले रसोई में आ धमकी और माँ से बोली 'हलवा बन रहा है, माँ मुझे दो, भूख बहुत लगी है। माँ ने तब डांटते हुए कहा, सब्र करो, पहले भगवान जी को भोग लगाना है तब सभी को बंटेगा।

रितिका और मैं अब अपने कमरे में जा हलवे का इंतजार करते हुए आज दिन की घटना पर बात चीत करने लगे। कुछ देर बाद माँ ने मुस्कुराते हुए मुझे और रितिका को प्लेटों में हलवा दिया। हलवा खाते वक़्त माँ की ममता व आज मेरे बचाव पर माँ के भगवान का धन्य भाव और माँ की सभी नसीहत को मैं कृतज्ञ भाव से अपनी चेतना में समा लेना चाहती थी। उम्र के इस पड़ाव पर, आज अपने निज परिवार की देखभाल में अन्यथा जीवन की किसी प्रकरण-डगर पर, माँ की नसीहत को मार्ग दर्शन रूप में, मैं सदैव ही शिरोधार्य किये रहती हूँ। मेरे लिए यही प्रथम और अंतिम प्रभु आराधना है।

चम्पा-चमेली की लोककथा

(दादी की कहानी)

मीरा पोद्दार
रंजन कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी की माताजी

बहुत समय पूर्व एक राज्य था। उसके राजा की सात रानियाँ थीं, पर किसी की भी गोद न भरी थी। राजमहल वैभव से भरा हुआ था, किन्तु राजा का हृदय सूनापन ढो रहा था। संतान-विहीनता उसकी आत्मा को रोज़ कुरेदती रहती थी।

एक दिन उसने अपने गुरु के चरणों में व्यथा रखी। गुरु ने ध्यानमग्न होकर कहा

"राजन, तुम्हें भाग्य तभी संतान देगा जब तुम आठवीं रानी से विवाह करोगे। उसी के गर्भ से पुत्र और पुत्री जन्म लेंगे।"

राजा ने गुरु-वचन को सत्य मानकर आठवीं रानी से विवाह किया। वह रानी सरल, करुणामयी और सातों रानियों से भी स्नेहभाव रखती थी। समय बीतते ही उसके गर्भवती होने का समाचार सुनकर राजा ने मानो जीवनदान पा लिया।

किन्तु जहां सुख होता है, वहीं ईर्ष्या भी सिर उठाती है। सातों रानियां भीतर ही भीतर जलने लगीं। वे सोचतीं "अब राजा का हृदय तो केवल इसी पर ठहरेगा।"

समय आया। राजा शिकार पर था। आठवीं रानी ने दो संतानों एक बालक और एक बालिका को जन्म दिया। यही क्षण सातों रानियों के विषभरे षड्यंत्र का अवसर था। उन्होंने दासी को लालच देकर कहा"बच्चों को समाप्त कर दे, राजा से कह देंगे कि रानी ने ईंट और खापर को जन्म दिया है।"

पर दासी का हृदय पाषाण नहीं था। उसने बच्चों को नदी तट पर छोड़ दिया जहां एक निर्धन कुम्हार और उसकी पत्नी उन्हें पाकर हर्ष से भर उठे। वे वर्षों से संतानहीन थे, इस वरदान को उन्होंने "चम्पा" और "चमेली" नाम दिया।

राजमहल में लौटे राजा को जब ईंट और खापर दिखाए गए तो वह अज्ञानवश क्रोध से अंधा हो उठा। आठवीं रानी पर अपमान की वर्षा की गई, नाक-कान काटकर उसे जंगल में भटकने के लिए छोड़ दिया गया।

बच्चे कुम्हार-घर में फूलों से खिले पर नियति को कुछ और ही परीक्षा लेनी थी। एक दिन वे खेलते खेलते राजमहल तक जा पहुंचे। बड़ी रानी ने उन्हें देखा और पहचान लिया। आदेश हुआ "इन अंकुरों को जड़ से मिटा

दो।"नौकरों ने मारने का साहस न किया परंतु उन्हें वन में छोड़ आए। वहां वे चमत्कारवश चम्पा व चमेली के पुष्पों में रूपांतरित हो गए।

राजा के हृदय में संतान की पीड़ा अब भी शूल की भांति चुभती रही। वह पुनः गुरु के पास पहुंचा। गुरु ने दृष्टि मूंदी और कहा"राजन, तुम्हारी संतान जीवित है। वे फूल बने तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं परंतु माता की उपस्थिति के बिना वे लौटेंगे नहीं।"

राजा का हृदय पसीजा। उसने तत्काल दूत भेजकर उस अपमानित रानी को बुलवाया और स्वयं उसके साथ वन पहुंचा। वहां जाकर राजा ने करुण स्वर में अपने बच्चों को पुकारा किन्तु फूल बने चम्पा-चमेली मौन रहे।

राजा निराश हो गया पर जब मां ने अश्रुभरी भीगी आंखों और कंपित स्वर में पुकारा"बेटा... बेटी... तुम्हारी मां आई है!"

तभी एक चमत्कार घटित हुआ। फूलों से एक मधुर स्वर फूटा"अब हम अपने माता-पिता संग ही लौटेंगे।"

क्षणभर में वे दोनों फूल झरकर एक बालक और एक बालिका के रूप में प्रकट हो गए। वे दौड़कर माता-पिता की गोद में समा गए और अपने जन्म से अब तक की सारी कथा कह सुनाई।

राजा का भ्रम टूटा। सत्य ने उसके नेत्र खोल दिए। उसने सातों कपटी रानियों को उनके षड्यंत्र का दंड दिया और आठवीं रानी को पुनः राजमहल में प्रतिष्ठा दी। गुरु के आशीर्वाद के साथ परिवार पूर्ण हुआ और राज्य में सुख-शांति का वास हुआ।

शिक्षा-

क) छल और ईर्ष्या अंततः विनाश का कारण बनते हैं।

ख) सत्य और भलाई चाहे जितनी बाधाओं में छिप जाए, उसका प्रकाश अंततः प्रकट होकर सबको आलोकित करता है।

ग) धैर्य, करुणा और विश्वास ही जीवन की सबसे बड़ी शक्ति हैं।

सोशल मीडिया: जुड़ाव का साधन या अकेलेपन का कारण?

सुप्रिया पाण्डेय
सहायक लेखा अधिकारी

मानव सभ्यता के इतिहास में विज्ञान ने हमेशा प्रगति की कहानी लिखी है, लेकिन पिछले तीन-चार दशकों में इसकी गति इतनी तीव्र रही है कि यह एक क्रांति से कम नहीं है। इस प्रगति की एक क्रांतिकारी देन है -सोशल मीडिया। एक व्यक्ति आज के समय पर अनेकों सोशल मीडिया के प्लेटफॉर्म जैसे फेसबुक, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, टेलीग्राम, इत्यादि से जुड़ा हुआ है। उसके सोशल मीडिया पर अनेकों मित्र हैं, विभिन्न-विभिन्न रूचिकर एवं जानकारी वर्धक पृष्ठ हैं जिससे वह जुड़ा हुआ है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि इन्सान ने एक छोटी सी स्क्रीन पर अपने लिए एक अलग दुनिया का निर्माण कर लिया है। अगर मनुष्य इसको आवश्यकता अनुसार उपयोग करे तब यह एक वरदान स्वरुप है। एक क्लिक करते ही हम दुनिया के किसी भी कोने में बैठे व्यक्ति से जुड़ सकते हैं। इसके साथ ही लेकिन एक विरोधाभासी सवाल हमारे सामने खड़ा हो जाता है : क्या यह तकनीक वास्तव में हमें जोड़ रही है, या फिर एक भ्रमजाल रचकर हमें गहन अकेलेपन की ओर धकेल रही है? इस प्रश्न का उत्तर इतना सरल नहीं है, क्योंकि सोशल मीडिया के दो पहलू हैं – एक जो जुड़ाव बढ़ाता है और दूसरा जो अकेलापन पैदा करता है।

जुड़ाव का सशक्त साधन:

निस्संदेह, सोशल मीडिया ने मानवीय संपर्कों के दायरे का विस्तार किया है। विदेश और देश के विभिन्न शहरों में रह रहे बच्चे अपने माता-पिता से वीडियो कॉल पर रोज मिल लेते हैं। माता-पिता भी नियमित रूप से अपने बच्चों को देख पा रहे हैं और अपनी अगली पीढ़ी से दूर रहते हुए भी जुड़े रह पा रहे हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से लोग अपने पुराने मित्र, जो समय और स्थान की दूरी के कारण बिछड़ गए थे, वापिस एक-दूसरे की जिंदगी का हिस्सा बन गए हैं। जो लोग अपनी विवशताओं के कारण अपने परिवार के पर्व एवं समारोह का हिस्सा नहीं बन पा रहे वे भी इसके माध्यम से उस समारोह या पर्व का हिस्सा बन जाते हैं। सोशल मीडिया एक आन्दोलनकारी मंच भी है जिसके द्वारा लोग किसी भी सामाजिक बदलाव को लाने के लिए एकत्रित हो सकते हैं। सिर्फ इतना ही नहीं आज की तारीख में यह सूचना का भी स्त्रोत बन गया है। यह दुनिया भर की खबरों, नए विचारों और ज्ञान से जुड़े रहने का सबसे तीव्र माध्यम बन गया है। इसके द्वारा लोग अपने रुचि-आधारित समुदाय से भी जुड़ रहे हैं। चाहे फोटोग्राफी हो, कविता लेखन हो, चित्रकारी हो या कोई अन्य रूचि हो, सोशल मीडिया पर उससे जुड़े समुदाय मिल जाते हैं। इससे लोगों को अपनी रुचि साझा करने और

सीखने का मौका मिलता है। यह उन छात्रों के लिए भी एक वरदान की तरह है जो मुख्यधारा से दूर हैं और अपनी पढाई को अग्रसर रखना चाहते हैं या कुछ ऐसा सीखना चाहते हैं जिससे न केवल उनका जीवन बदल सकता है बल्कि उनके समुदाय गांव आदि का जीवन भी बदल सकता है।

अकेलेपन का गहरा कुंड:

लेकिन इसके विपरीत, सोशल मीडिया के कई ऐसे पहलू हैं जो मानसिक अकेलेपन और चिंता को बढ़ावा दे रहे हैं। लोग घर में हो या पार्क में, सामूहिक बैठक में हो या समारोह में हो, वे आपस में आमने-सामने बैठकर बातें साझा करने और हँसी-मज़ाक करने की बजाय अब मोबाइल की स्क्रीन पर समय बिता रहे होते हैं। इसके कारण लोग वास्तविक दुनिया में संवाद करने में हिचकिचाने लगे हैं। लोगों के 'फ्रेंड्स' और 'फॉलोअर्स' की संख्या बढ़ तो गई है, लेकिन असली, गहरे और भावनात्मक रिश्ते कम होते जा रहे हैं। जब वास्तव में इन्सान को अकेलापन घेर ले और उसको किसी से बात करने की इच्छा हो, अपने मन की अभिव्यक्ति करने की इच्छा हो तो एक हज़ार वर्चुअल दोस्त भी उस अकेलेपन को नहीं भर सकते। सोशल मीडिया की वजह से लोगों को वास्तविकता और भ्रम का अंतर भी ख़त्म होता जा रहा है। लोगों को वही भ्रमजाल सत्य लगने लगा है। हर कोई सोशल मीडिया पर अपनी जिंदगी के "हाइलाइट रील" ही दिखाता है – खुशियाँ, सफलताएँ, यात्राएँ। इन 'छन्नी-हुई' जिंदगियों को देखकर आम इन्सान अपनी साधारण, संघर्षपूर्ण जिंदगी से तुलना करने लगता है। इससे हीन भावना, असंतोष और अकेलापन पैदा होता है। इसकी पूर्ति के लिए वह अपनी वास्तविकता को अनदेखा कर एक उधार की काल्पनिक ज़िन्दगी की ओर चल पड़ता है। अपने स्वयं के जीवन की प्रमाणिकता के लिए मनुष्य उन लोगों पर निर्भर होते जा रहा है जिनको वास्तविकता में उसके जीवन से कोई लेना-देना नहीं है।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया अपने आप में न तो अच्छा है और न ही बुरा। यह एक साधन मात्र है, और इसका प्रभाव पूरी तरह से हमारे उपयोग के तरीके पर निर्भर करता है। यदि हम इसका उपयोग वास्तविक संपर्कों को मजबूत करने, ज्ञान बढ़ाने और सकारात्मकता फैलाने के लिए करें, तो यह जुड़ाव का एक अद्भुत साधन साबित हो सकता है। लेकिन यदि हम इसके भ्रमजाल में फंसकर वास्तविक दुनिया और वास्तविक रिश्तों से कट जाएँ, तो यही अकेलेपन की सबसे बड़ी वजह बन जाता है।

अनसुलझा रहस्य

पवन कुमार
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

अमरोहा में साल 1943 के अब बसंत की वो फुलवार और प्रकृति की नव छठा अपने पूरे यौवन पर थी। सर्द ऋतु के बाद, अब बाण नदी की स्वच्छ बहती जल धारा, जल की सौम्य गतिशीलता को प्रकट कर रही थी। गाँव कस्बों के खेतों की हरियाली, पेड़ों पर फूटती नई कोपलों के पुंज, ताजा नए पतों के दृश्य-मंजर एक नई उर्जा व ताजगी की गवाही दे रहे थे।

अमरोहा के एक मोहल्ले में आज एक घर में कुछ खासी ही रौनक थी। जहाँ एक बेहद, हसीन, खुबसूरत युवती अझरा का निकाह अमरोहा से कुछ ही दूर के कस्बे के युवक मुर्तजा से हो रहा था। निकाह की सब रस्में पूरी हो गयी और अब घर में आये सभी मेहमान और रिश्तेदार व मोहल्ले के लोग, निकाह के भोज का आनंद ले रहे थे। वातावरण में उल्लास, उत्साह व उत्सव का माहौल था। क्यूँकर अझरा की उम्र अभी कमतर ही थी इसलिए दोनों तरफ से उपस्थित घर वालों ने यह फैसला लिया कि अझरा की रुकस्ती यानि विदाई एक साल बाद ही होगी।

तब से अझरा, अब बहुत खुश रहती और अपने पिया के घर जाने के सपनो में अक्सर खोई रहती। उस की सहेलियां कभी कभी इस बारे बात करती, तो अझरा कुछ शरमा कर उन को टाल सा देती। दिन बीतते जा रहे थे, और अभी सावन मास चल ही रहा था कि एक दिन अचानक खबर आई कि मुर्तजा इस दुनिया में ना रहे। अझरा के घर में कुछ मातम सा गहरा गया। घर की औरतों में रोना धोना वाजये हो गया। तुरन्त ही खबर अझरा तक भी पहुँच गयी। उस पर यह ऐसा क्या कहर बरपा हो गया कि अझरा तो खामोश सी ही हो गयी और उस की तरफ से खबर सुन कोई प्रतिक्रिया ना हुई। चुपचाप एक कमरे में सुन्न सी बैठ गयी। किसी से कुछ ना बोली, खामोश भाव रहित बिस्तर में लेटी रही। घर के बजुर्गों ने कहा कि यह स्थिति ठीक नही, उसे रुलाने की कोशिश करिये ताकि उस के दुःख का गुब्बार, आँखों के रास्ते आँसू बन, दिल से निकल सके। कुछ कोशिशें की भी गयी, पर सब नाकाम रही।

दुसरे रोज़ से अझरा अब घर की ऊपरी मंजिल वाले कमरे में चली गयी और वहीं दिन भर अकेली रहती और वहीं सो जाती। घर से बाहर निकलना और नीचे के कमरों में आना जाना, अझरा ने अब छोड़ ही दिया। अत: यह सब देख, घर वालों के द्वारा अझरा को खाना- पीना ऊपर ही पहुंचा दिया जाने लगा। अझरा की

माँ और घर की दूसरी औरतों ने कई बार अझरा से बातचीत करने की कोशिश की और कई बार अझरा की सहेलियों को भी समझा बुझा कर अझरा को समझाने के लिए उस के पास ऊपर भेजा पर कोई लाभ न हुआ। तक़रीबन दो महीने यूँ ही व्यतीत हो चले थे।

एक दिन अचानक अझरा नया सुर्ख रंग के जोड़े को पहन कर, अपने बालों पर फूल लगा, सज-सँवर कर नीचे आई तो उस की खास सहेली यह देख अचरज में आ गयी, उस ने अझरा से पूछ लिया कि अझरा क्या बात है, "यह खास सुन्दर लिबास में आज कैसे तुम अझरा।" दूसरी बार सहेली के पूछने पर अझरा ने शरमाते हुए कहा – " कि वो, यानि मुर्तजा कल रात आये थे मुझे साथ ले जाने के वास्ते।" और फिर ऊपर अपने कमरे में दाखिल हो गयी। कुछ देर बाद शाम के वक़्त उसकी सहेली ने इस बात का जिक्र जब उस की माँ से किया तो वे सब ऊपर कमरे में अझरा को देखने गए। दरवाजा खोला, वो हैरत से क्या देखते है कि अझरा बिस्तर पर निढाल यानि इस दुनिया से ही अझरा रुखसती कर चुकी थी। अत: अझरा के इस खामोश व मौन मौत घटनाक्रम की खबर चारों तरफ फ़ैल गयी और हर कोई वेदना और पीड़ा में डूब गया।

इस खबर को सुनते ही घर-रिश्तेदार और आसपास के सभी लोग हत-प्रभ हो, दुःख और वेदना में ग्रसित हो गये। इस वाक्या से किस तरह, तन्हाई मे घट गया, सभी बहुत हैरान और परेशान-ए-कुल रह गये। एक बेहद कम उम्र, जमील, कमसिन व हसीन लड़की पर यह सब क्या तारी हो गया और जो किसी की भी समझ में ना आ सका। कैसे एक कमतर उम्र की एक हसीन जिन्दगी, एक खौफनाक ख़ामोश-ओ-तन्हाई में, हाथ से रेत की तरह निकल गयी और एक अनसुलझा रहस्य बन गयी।

जोन* के साल 1992 में एक पाकिस्तान रेडियो पर "पुरानी यादें" नाम के साक्षात्कार में, जब उन्होंने अपने बचपन के दौरान बीती इस दुखद: घटना वाकया को अपने जज्बाती अल्फाजों से बयाँ करते हुए यह बताया कि आज भी कभी जब यह वाकया उन्हें याद हो आता है तो वह उस बीते वाक्यात की केफ़ियत से बहुत ही गम-जदा हो जाते हैं। जोन की सुनाने की शैली और इस घटना के मार्मिक वेदना को सुन, मैंने इस सच्ची कथा को अपने निज शब्दों से व्यक्त कर साझा करने का निर्णय लिया।

---

*उतर प्रदेश के अमरोहा के रहने वाले जोन एलिया भारत से पाकिस्तान साल 1957 में चले गये थे।जोन एलिया उर्दू जुबान के एक आजिम शायर, नसर-निगार, और फलस्वी है जिनको हिंदी, अरबी, फारसी, संस्कृत और अंग्रेजी भाषाओं पर खास अबूर व महारत हासिल रही है।

देवेन्द्र- एक आम युवक की असाधारण उड़ान

रंजन कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

उत्तर प्रदेश के छोटे से गाँव ननदपुर में जन्मे देवेन्द्र सिंह का जीवन किसी फिल्मी कहानी से कम न था। घर कच्चा था, छत से बरसात टपकती थी और रसोई से धुएं के साथ मां की खांसी की आवाज़ आती थी। पिता दूसरों के खेतों में ट्रैक्टर चलाते थे, माँ खेतों में मज़दूरी करती थीं।

बचपन में किताबें, अच्छे कपड़े, यहां तक कि जूते तक सब सपनों जैसे थे। सरकारी स्कूल में पढ़ाई करते समय बच्चे उसका मज़ाक उड़ाते।"अबे झोलू, पढ़ने आया है या सब्ज़ी बेचने?"

कभी बैग से प्याज़ निकल आता, कभी चप्पल छोटी पड़ जाती। हंसी सब उड़ाते मगर देवेन्द्र चुप रहता।

उसके भीतर एक आग थी, गुस्से की नहीं, पढ़ाई की। रात को टूटी रेडियो पर बीबीसी हिंदी सुनते हुए वह अक्सर सोचता, "एक दिन मेरा नाम भी लोग जानेंगे — देवेन्द्र सिंह।"

कस्बे से ग्रेजुएशन पूरा करना ही अपने आप में संघर्ष था। पैसों की तंगी, रिश्तेदारों के ताने और पिता की बीमारी ने राह कठिन कर दी। लेकिन देवेन्द्र ने हार नहीं मानी।उसने एसएससी सीजीएल परीक्षा दी और पहले ही प्रयास में भारत सरकार के ऑडिट विभाग में चयनित हो गया।पहली पोस्टिंग मिली, शिमला (हिमाचल प्रदेश)। गांव से निकलकर बड़े सरकारी दफ़्तर तक पंहुचना उसके लिए किसी सपने जैसा ही था।

ऑफिस की जॉइनिंग सेरेमनी में जब उसकी बारी आई तो देवेन्द्र कांपते हुए माइक पर पहुंचा।

"म... मेरा नाम... दे...देवेन्द्र... स्स्सिंह है ना..."वह हकला गया और साथ ही अपनी देशी आदत भी सामने आ गई।

दरअसल, देवेन्द्र की बोली में गांव की मिट्टी बसी हुई थी। हर वाक्य के बाद वह सहज ही कह देता — "ना।" "मैं ननदपुर से हूँना।" "हां, मैंने रिपोर्ट जमा कर दी है ना।"

सहकर्मी आपस में हँसने लगे, "अरे...यह तो हर बात में ना ना करता है।"

"इसकी हिंदी भी गांव वाली है ना।"

देवेन्द्र मुस्कुरा दिया पर भीतर से टूट गया।"गांव में मास्टर हंसते थे, अब यहां ऑफिस में भी मज़ाक हो रहा है।

क्या मेरी बोली भी मेरी कमी है?"

देवेन्द्र का पहनावा भी सादा था। पुराने, धोए-धुलाए कपड़े, सालों से संभाल कर रखे जूते। सहकर्मी चुटकी लेते, "ओ भाई देवेन्द्र, कभी ब्रांडेड कपड़े भी पहन लिया कर।" "तेरे जूते तो म्यूज़ियम में रखने लायक हैं।"

शाम को दारू पार्टी में बुलाया जाता तो वह साफ मना कर देता।

"भाई, मैं शराब नहीं पीता ना।"लोग हंसते — "यार, आज के ज़माने में दारू न पीना अनुकूल है। तू तो बड़ा बोरिंग आदमी निकला।"धीरे-धीरे वह "देहाती, गंवार और बोरिंग" कह कर पुकारा जाने लगा।

एक दिन विभागाध्यक्ष मिश्रा जी ने मीटिंग बुलाई।काम था, हिमाचल के दुर्गम गांवों, स्कूलों और पंचायतों की ऑडिट।

देवेन्द्र ने झिझकते हुए कहा, "सर, मुझे ऊंचाई से डर लगता है ना... इसे अंग्रेज़ी में "Acrophobia" कहते हैं।"

मिश्रा जी ने खीझकर कहा, "हा हा, पता है मुझे... ऊंचाई से डर को "Acrophobia"कहते हैं।" पूरा कमरा ठहाकों से गूंज उठा, "देखो, डर भी अंग्रेज़ी में बता रहा है ना।"

देवेन्द्र चुप हो गया। "यहां भी मज़ाक... क्या मैं कभी खुद को साबित कर पाऊंगा?"

कुछ ही दिनों बाद एक कठिन असाइनमेंट आया, पांच जिलों की पंचायतों, स्कूलों और स्वास्थ्य विभाग की ऑडिट। फाइलें गायब, अधिकारी असहयोगी और जानलेवा पहाड़ी रास्ते।

सभी पीछे हट गए।मिश्रा जी ने ताना मारते हुए कहा, "देवेन्द्र, तू ही कर ले। तुझे तो गांव पसंद हैं ना।"देवेन्द्र ने सिर झुकाकर कहा, "ठीक है सर, मैं कर लूंगा ना।"

छः महीने तक उसने अकेले गांव-गांव की यात्राएं की। कभी नदी पार की तो कभी खड़ी पहाड़ी चढ़ी। कई बार खाई देखकर उसका "Acrophobia"जाग गया मगर उसने खुद को मजबूत किया। भूखा रहा, बीमार पड़ा, मगर हार नहीं मानी।

अंततः उसकी रिपोर्ट तैयार हुई। करोड़ों की अनियमितताएं सामने आई–फर्जी योजनाएं, भूतिया कर्मचारी, सचिवों की मिलीभगत।

रिपोर्ट दिल्ली पहुंची तो मंत्रालय तक हड़कंप मच गया।

मीडिया और विजिलेंस में चर्चा हुई, "शिमला से एक छोटे अधिकारी ने बड़ा घोटाला उजागर किया।"

नाम था, देवेन्द्र सिंह, ननदपुर निवासी। उसे राष्ट्रपति भवन में बुलाकर सम्मानित किया गया।

वे ही सहकर्मी, जो उसकी बोली, कपड़ों और जूतों पर हंसते थे, अब उसके साथ फोटो खिंचवाने को उत्सुक थे।

मंच से देवेन्द्र ने कहा, "आज के ज़माने में लोग समझते हैं कि कूलनेस ब्रांडेड कपड़ों और शराब में है ना लेकिन असली कूलनेस मेहनत, ईमानदारी और हिम्मत में है ना।"

देवेन्द्र की कहानी हमें सिखाती है:

क) Character is louder than Communication.

ख) किसी का मज़ाक उसके कपड़ों, बोली या गांव पर मत उड़ाइए।

ग) हर इंसान के भीतर एक संघर्ष छिपा है जिसे आप नहीं जानते।

घ) इज़्ज़त पाने के लिए आवाज़ नहीं, कर्म बोलते हैं।

ङ) असली व्यक्तित्व भाषा या दिखावे में नहीं बल्कि आचरण, ईमानदारी और कर्मठता में होता है।

च) "सत्यं वद, धर्मंचर। आचारः परमं धर्मः।"(सत्य बोलो, धर्म का पालन करो। आचरण ही सर्वोत्तम धर्म है।)

छ) और सबसे बड़ी सीख, "यशः कर्मणा जायते, न तु वचनेन।"(यश कर्मों से उत्पन्न होता है, केवल बातों से नहीं।)

वक्त पाबंदी का अजीब वाकया

श्री गौरी शंकर
एम.टी.एस.

हाल ही के मोबाइल से आधारित उपस्थिति दर्ज करने पर कई कर्मियों के मन भाव की हलचल को अनुभव करते हुए मुझे एक पिछले साल का कदाचित निज वाकया स्मरण आ गया।

विगत 20 सालों से मैं महालेखाकार सचिवालय में एम टी एस के रूप में कार्यरत रहा हूँ। मेरा गांव खलग जो कि जुब्बढ़ हटी के समीप स्थित है। अत: सुबह 7 बजे वाली बस से यात्रा करना एक नियम रहा है ताकि कार्यालय में उपस्थिति 8:20 तक निश्चित हो सके। नाश्ता तो कार्यालय पहुंच कर करीबन 8:45 पर ही किया जाता है। यही बीस साल का नियम या दस्तूर बन गया है।

पिछले साल के नवरात्रों की यह घटना व सोमवार का दिन था, कि हमारी बस 7 बजे की बजाय, 7.15 बजे के करीब आई। बस देरी हो जाने का भाव मन में समा चुका था। बस में जा कर मैंने अपना लैपटॉप बैग, जिस में नाश्ता और दोपहर का भोजन रहता था उस बस में सीट के उपर बने स्थान पर रख दिया। आज मन में कार्यालय में नियमित वक्त से देरी का ख्याल घर कर चुका था और इस पर मन कुछ चिंतित और अशांत सा था।

अपने गन्तव्य यानि विक्टरी टनल आने पर मैंने तत्क्षण अपना बैग ऊपर से लिया और कार्यालय की तरफ तेज कदमों से चल पड़ा। अब चन्द मिनट बैठा और नाश्ता कर लेने का विचार किया और बैग खोला, तो क्या देखा! उस में मेरा खाना तो नहीं था। उस में तो और छोटा चमड़े का सुंदर बैग था जिस में डेबिट कार्ड और गाड़ी की चाबियाँ व कुछ अन्य महत्वपूर्ण पेपर थे। बात अब मेरी समझ आ चुकी थी, कि जल्दी जल्दी में किसी अन्य सवारी का बैग ले आया हूँ। समझ नहीं आ रहा था कि उस को यह बैग कैसे वापिस दे सकूंगा और मेरा खुद का बैग भी प्राप्त हो सकेगा या नहीं?

विचार किया गया क्यूँकि वो बस शिमला बस स्टैंड पर 1 घंटे बाद वापिस कुनिहार जाएगी। सो, उस बैग को लेकर मैं सरपट बस स्टैंड भाग पड़ा। बस का परिचालक बस में था। मैंने अभी अपना बीता बैग-प्रकरण शुरू ही किया था कि परिचालक ने मुस्कुरा कर मुझे रोका और कहा: जनाब गौरी शंकर जी आप का खुद का बैग काउंटर पर सुरक्षित रखवा दिया गया है। आप तो अपने बैग के स्थान पर रिपन निरीक्षक, मयंक गौतम जी का बैग ले गये। आप ने तो आज मयंक गौतम जी को भयंकर रूप से चिंतित कर दिया। अगले ही पल वो मुझे काउंटर पर ले जा कर बैग सौंपते हुए मुस्कुरा कर बोले, कभी कभी ऐसा हो जाता है और कहा कि अब यहाँ तक जब आ गए हो तो रिपन जाकर उनका बैग उन्हें सौंप कर बेफिक्र हो जाये।

अगले 10 मिनट बाद मैने मयंक गौतम जी के कक्ष में प्रवेश किया और उन को आज सुबह का बीता घटना क्रम सुना कर बैग सौंपते हुए माफ़ी मांगी। शायद मयंक गौतम जी, मेरा सहज, सरल स्वभाव देख कर परिचालक भांति ही हंसने लगे और अब चाय व समोसे भी मेरे सामने आ चुके थे। मैंने कहा, मयंक जी कार्यालय के लिए पहले ही देर हो गयी है, चाय कभी किसी और दिन पी लूँगा। मयंक जी तब फटाक से मुस्कुरा कर बोले, मैंने भी आप से अभी अपना बैग नहीं लेना। जब समय मिलेगा तब आना और चाय पी कर ही मुझे बैग वापिस देना। यह सुन मुझे भी हंसी आ गयी और मैंने जल्द जल्द चाय पीनी शुरू कर दी। तभी मयंक जी ने कहा कि हमारे लायक कोई सेवा बताओ जनाब, उपचार हेतु अलग अलग डॉक्टर से आप को मिला सकते है। मेरे मुख से तभी निकल गया, मयंक जी आप के उपचार सेवा प्रदान करवाने के लिए मुझे पहले बीमार भी तो होना पड़ेगा। यह सुन वहाँ बैठे कक्ष के 02 कर्मी और मयंक जी जोर जोर से हंसने लगे और बोले बिल्कुल सही बात कही जनाब आप ने !

अब कुछ देर में, मैं वापिस कार्यालय लौट आया। सच में कार्यालय में सही समय पर पहुंच जाने के, स्वयं-भू नियम में कुछ विलम्ब की सोच-मात्र ने ही आज तो इस अनोखे घटना क्रम को जन्म दे दिया।

आस्था एवं विश्वास

जगदीश चंद कश्यप
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

मनुष्य के जीवन में कई उतार चढ़ाव आते रहते हैं। कभी हम सफलता की उँचाईयों पर होते हैं तो कभी चुनौतियों से घिरे होते हैं। ऐसे समय में दो चीजें जो हमें मजबूत बनाती हैं वह हैं – आस्था और विश्वास। ये दोनो गुण जीवन की कठिनाइयों का सामना करने के लिये हमारे सबसे बड़े हथियार होते हैं। आस्था चाहे ईश्वर में हो या अपने कर्मों में। आस्था हमें यह विश्वास दिलाती है कि हर रात के बाद एक नई सुबह होती है। जहाँ आस्था होती है वहाँ रास्ता अपने आप बनता है। आस्था हमें हिम्मत देती है और विश्वास हमें स्थिर बनाए रखता है। जिस मनुष्य ने आस्था एवं विश्वास का दामन थामा उसने जीवन की हर परीक्षा पास कर ली।

आस्था और विश्वास दोनों ही मानसिक स्थितियाँ हैं, लेकिन उनमें कुछ महत्वपूर्ण अंतर है। आस्था एक गहरी भावना है जो बिना किसी प्रमाण के किसी चीज या व्यक्ति पर अटूट विश्वास करने की अनुमति देती है। यह अक्सर धार्मिक या आध्यात्मिक मान्यताओं से जुडा होता है। विश्वास किसी चीज या व्यक्ति पर दृढ़ यकीन है जो अनुभव या तर्क पर आधारित हो सकता है। आस्था में संदेह या तर्क की गुंजाईश कम होती है जबकि विश्वास में संदेह या तर्क की गुँजाईश हो सकती है। एक व्यक्ति किसी दोस्त पर विश्वास कर सकता है कि वह उसके साथ हमेशा खड़ा रहेगा क्योंकि इससे पहले भी कई बार ऐसा किया है, यह विश्वास है।

इसलिए जीवन में चाहे कितनी भी कठिनाई क्यों न आ जाए अगर हमारे पास आस्था व विश्वास है तो कोई भी बाधा हमें आगे बढ़ने से रोक नहीं सकती।

हिमाचल प्रदेश का सौंदर्य, कोमलता और आपदाएं

मुकेंद्र कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

आपदाएं कैसे भयावह हो सकती है, यह इन चित्रों से परिलक्षित है। फोटो: विभिन्न समाचार पत्र

हिमाचल प्रदेश, अपने लुभावने पहाड़ों, शांत घाटियों और जीवंत संस्कृतियों के साथ अक्सर "देवताओं के निवास" के रूप में प्रतिष्ठित किया जाता है। फिर भी इस के शांत आकर्षण के नीचे एक नाजुक वास्तविकता छिपी है। प्रकृति की वहीं ताकतें जिन्होंने इसके राजसी परिदृश्यों को आकार दिया, विनाशकारी आपदाओं को भी उजागर करती हैं- भूकंप, बाढ़, भूस्खलन, और बहुत कुछ - जो जीवन, आजीविका और राज्य की अर्थव्यवस्था को बाधित करती हैं। प्रत्येक आपदा अपने पीछे न केवल शारीरिक विनाश बल्कि गहरे भावनात्मक निशान भी छोड़ती है जो अपने लोगों के लचीलेपन और भावना की परीक्षा लेती है। बदलते मौसमी परिदृश्य में प्राकृतिक घटनाएं दुर्घटनाओं को जन्म दे रही हैं। लोगों के बसे बसाए परिवार, घर, व्यापार एक झटके में ख़त्म हो रहे हैं। ये साझी समस्याएं सरकारों एवं लोगों को साथ मिलकर बेहतर उपायों की तलाश करने के लिए बाध्य करती है। हिमाचल प्रदेश में 2025 में ब्यास नदी का जलमार्ग परिवर्तन,बादल फटने की घटनाएं, अनियंत्रित भूस्खलन बारिश के मौसम में यातायात को बाधित कर रहे हैं एवं लोगों के लिए खतरे उत्पन्न कर रहे हैं।

आपदाओं से उकेरा गया इतिहास

भूकंपीय जोखिम

अत्यधिक संवेदनशील हिमालयी क्षेत्र में स्थित हिमाचल प्रदेश भूकंपीय खतरों के प्रति गहराई से संवेदनशील है। पूरा राज्य भूकंपीय क्षेत्र IV और V(उच्च से बहुतअधिक क्षति जोखिम वाले क्षेत्र) केअंतर्गतआता है। 4 अप्रैल 1905 का कांगड़ा भूकंप सबसे विनाशकारी हुआ जिसमें लगभग 19,800 लोग मारे गए थे और बुनियादी ढांचे के बड़े हिस्से को नष्ट कर दिया था। हमीरपुर (1980) में छोटे झटके उभरते खतरे की याद दिलाते हैं। विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि इस क्षेत्र में अभी भी 8.0 तीव्रता से अधिक भूकंप आने की संभावना है।

जल-मौसम संबंधी खतरे

जीवन देने वाली हिमालयी नदियां-चिनाब, रावी, ब्यास और सतलुज बहुत तेजी से विनाशकारी हो रही हैं। उदाहरण के लिए 2000 में सतलुज घाटी में अचानक आई बाढ़ से 140 लोगों की मौत हो गई, 20 पुल बह गए और 1,466 करोड़ रुपये से अधिक का नुकसान हुआ। 2023 के मानसून में अभूतपूर्व वर्षा हुई जिसके कारण 500 से अधिक लोगों की जान चली गई, 5,400 सेअधिक भूस्खलन हुए, 45 जगह बादल फटे और 83 जगह अचानक बाढ़ आई जिसके परिणामस्वरूप 8,600 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। इसी तरह वर्ष 2024 एवं 2025 में भी वर्षा व नदियों के रौद्र रूप के कारण अत्यधिक जन-धन की हानि हुई| 2025 में राज्य को मध्य सितम्बर तक अनुमानतः 4000 करोड़ रुपये से ज्यादा का अवसंरचनात्मक नुकसान उठाना पड़ा है।

भूस्खलन नाजुक भूविज्ञान, तीव्रवर्षा, विवर्तनिक अस्थिरता और वनों की कटाई तथा अवैज्ञानिक सड़क काटने जैसी मानवीय गतिविधियां लगातार भूस्खलन का कारण बन रही हैं।अकेले 2023 मानसून में 5,400 से अधिक भूस्खलन हुए, जिससे राज्य भर में सड़कें, बस्तियां और बिजली परियोजनाएं क्षतिग्रस्त हुईं।

जंगल की आग हिमाचल के लगभग 93% वन क्षेत्र में आग लगने का खतरा है, खासकर शुष्क पश्चिमी हिमालय में। ज्यादातर घटनाएं मानव जनित हैं। वर्ष 2001 से 2023 के मध्य हिमाचल प्रदेश ने लगभग 957 हेक्टेयर वन आच्छादन का नुकसान उठाया है|

सड़क दुर्घटनाएं, जैविक खतरे सड़क दुर्घटनाएं अब प्राकृतिक आपदाओं की तुलना में अधिक वार्षिक मौतों के लिए जिम्मेदार हैं जो हर साल लगभग 1,600 लोगों की जान ले लेती हैं। पहाड़ी इलाके, लापरवाह ड्राइविंगऔरओवर-स्पीडिंग प्रमुख योगदान कारक हैं।

राज्य को जैविक खतरों का भी सामना करना पड़ा है: 2002 में प्लेग का प्रकोपऔर 1995 में "सेब धब्बा" कवक का हमला जिसने 40% से अधिक बागों को नष्ट कर दिया, जिससे ग्रामीण आजीविका गंभीर रूप से प्रभावित हुई।

मानव को नुकसान प्राकृतिक एवं मानवजनित आपदाओं का भावनात्मक और सामाजिक प्रभाव बहुतअधिक है। आपदाएं अक्सर परिवारों को विस्थापित करती हैं, आजीविका को बाधित करती हैं और मनोवैज्ञानिक संकट पैदा करती हैं - विशेष रूप से महिलाओं, बच्चों, बुजुर्गों और विकलांग लोगों में। घरों, खेतों और बुनियादी सेवाओं का नुकसान गरीबी व भेद्यता के चक्र को गहरा करता है।

हिमाचल प्रदेश में आपदाओं के साथ बार-बार होने वाली मुठभेड़ एक महत्वपूर्ण सत्य को रेखांकित करती है। इसकी प्राकृतिक सुंदरता इसकी अस्थिरता से अविभाज्य रूप से जुड़ी हुई है। जबकि राहत केंद्रित से एक सक्रिय, समुदाय-संचालित आपदा प्रबंधन मॉडल की ओर बढ़ने में प्रगति हुई है, आने वाली चुनौतियां हर स्तर पर मजबूत शासन, तकनीकी नवाचार और लचीलापन-निर्माण की मांग करती हैं। "बिल्ड बैक बेटर" के दृष्टिकोण को सभी पुनर्प्राप्ति प्रयासों का मार्गदर्शन करना चाहिए, जिससे भेद्यता को दीर्घकालिक ताकत में बदल दिया जा सके।

प्राकृतिक एवं मानव जनित आपदा से निपटने के लिए राज्य सरकार एवं लोगों को मिलकर आपदा जोखिम शासन को मजबूत करना होगा, पूर्व चेतावनी और प्रौद्योगिकी के उपयोग को बढ़ाना, सामुदायिक क्षमता और जागरूकता का निर्माण करें, लचीले बुनियादी ढांचे और सतत विकास में निवेश करें तथा रिकवरी और मनोसामाजिक समर्थन को मजबूत करना। राज्य सरकार एवं जनसहयोग हेतु बिन्दुवत सुझाव नीचे दिए गए हैं:

- राज्य और जिला आपदा प्रबंधन योजनाओं का वार्षिक अद्यतन, जलवायु अनुकूलन एवं जोखिम न्यूनीकरण का समावेश तथा समर्पित वित्त पोषण सुनिश्चित करना।
- भवन उप-नियमों और जोखिम मानचित्रों का कड़ाई से पालन, भूकंप एवं बाढ़ प्रतिरोधी निर्माण अनिवार्य करना।
- बाढ़, फ्लैश फ्लड, बादल फटना, जीएलओएफ और भूस्खलन हेतु वास्तविक समय बहु-खतरे वाली प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली स्थापित करना।
- जीआईएस और उपग्रह आधारित जोखिम मानचित्रण, क्षति आकलन और आईटी आधारित समाधान (जैसे आपदा प्रबंधन निगरानी प्रणाली, पर्यटक/तीर्थ प्रबंधन प्रणाली) अपनाना।
- अधिकारियों, इंजीनियरों, स्कूलों और समुदायों के लिए नियमित प्रशिक्षण, स्कूल सुरक्षा योजनाएँ

और सामुदायिक अभ्यास आयोजित करना।

- विद्यालय पाठ्यक्रम में आपदा शिक्षा का समावेश तथा "समर्थ"जैसे सतत जन-जागरूकता अभियान चलाना।
- स्कूल, अस्पताल और सार्वजनिक भवनों का भूकंपीय सुरक्षा हेतु पुनः सुदृढ़ीकरण तथा हिमालयी परिस्थिति-उपयुक्त, आपदा-रोधी सड़क डिज़ाइन लागू करना।
- आपदा प्रतिक्रिया में त्वरित, समावेशी तंत्र विकसित करना, विशेषकर कमजोर समूहों पर ध्यान देना तथा मानसिक स्वास्थ्य और मनोसामाजिक सहायता को शामिल करना।

हिमाचल प्रदेश एक जीवंत हिमालयी संस्कृति का मुकुट है एवं निरंतर आपदाएं लोगों को एकजुट होकर समाधान के रास्ते तलाशने के लिए बाध्य करती है। लोगों के भारी नुकसान को सरकारी मदद से पूर्ण रूप से कम तो नहीं किया जा सकता परन्तु यह ऐसे मौकों पर बहुत जरुरी हो जाता है। हिमाचल प्रदेश भविष्य में होने वाली आपदाओं से बेहतर तरीके से लड़ सके, इसके लिए साझे और वैज्ञानिक प्रयास करने होंगे|

जो सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ खूब लड़े सिख धर्म के पांचवे गुरु अर्जुन देव

रविंदर सिंह
लेखापरीक्षक

सर्वधर्म समभाव के प्रखर परोपकार होने के साथ साथ मानवीय आदर्शों के लिए आत्म बलिदान करने वाले एक महान आत्मा थे।उनका जन्म सिख धर्म के चौथे गुरु रामदास जी व माता भानी जी के घर 15 अप्रैल,1563 को गोइंदवाल अमृतसर, पंजाब में हुआ था। गुरु अर्जुन देव की निर्मल प्रवृति, सहृदयता, कर्तव्यनिष्ठा तथा धार्मिक एवं मानवीय मूल्यों के प्रति समर्पण भावना को देखते हुए गुरु रामदास जी ने 1581 में पांचवे गुरु के रूप में उन्हें गुरु गद्दी पर सुशोभित किया।इस दौरान उन्होंने गुरु ग्रन्थ साहिब जी का संपादन किया जो मानव जाति को इस पंथ की सबसे बड़ी देन है।संपूर्ण मानवता में धार्मिक सौहार्द पैदा करने के लिए अपने पूर्ववर्ती गुरुओं की वाणी को जगत-जगत से एकत्र करके उसे धार्मिक ग्रन्थ में परिष्कृत किया।गुरु जी ने स्वयं की उच्चारित 30 रागों में 2218 शब्दों को भी गुरु ग्रन्थ साहिब में दर्ज किया है। उन दिनों की बात है जब बाला और कृष्णा पंडित कथाएं करके लोगों को खुश करते हुए अपना जीवन यापन किया करते थे। एक दिन वे गुरु अर्जुन देव जी के दरबार में उपस्थित हुए और प्रार्थना करने लगे “महाराज !! हमारे मन में शांति नहीं है, आप ऐसा कोई उपाय बताए जिससे हमें शांति प्राप्त हो।” तब अर्जुन देव जी ने कहा “अगर मन की शांति चाहते हो तो जैसे आप लोगों को कहते हो, उसी प्रकार आप भी अनुसरण करो, अपनी कथनी पर अमल किया करो। परमात्मा को संग जानकर उसे याद रखा करो। अगर आप सिर्फ धन इकट्ठा करने के लालच से कथा करोगे तो आपके मन को शांति कदापि प्राप्त नहीं होगी बल्कि उल्टा आपके मन का लालच बढ़ता जाएगा और पहले से भी ज्यादा दु:खी हो जाओगे। कथा करने के अपने तरीके में बदलाव कर निष्काम भाव से कथा करो, तभी तुम्हारे मन में सच्ची शांति महसूस होगी।"अपने ऐसे पवित्र वचनों से दुनिया को उपदेश देने वाले गुरु जी का 43 वर्ष का जीवनकाल अत्यंत प्रेरणादायक रहा। वह आध्यात्मिक चिन्तक एवं उपदेशक के साथ ही समाज सुधारक भी थे।अपने जीवन काल में गुरु जी ने धर्म के नाम पर आडम्बरों एवं अंधविश्वास पर कड़ा प्रहार किया तथा सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ वह डटकर खड़े रहे। गुरु अर्जुन देव जी ने "तेरा किया मीठा लगे, हरिनाम पदार्थ नानक मांगें" शब्द का उच्चारण करते हुए वर्ष1606 में अमर शहीदी प्राप्त की।

वो सहमे पल

सुश्री किरण शर्मा
अतिथि लेखक

जीवन का वो अबोध व अनमोल भाग जिसे हम बचपन कहते हैं, सच जानिए एक अद्‌भुत अहसास, आनन्द व प्रसन्नता प्रदान करने वाला अवधि खंड होता है। इस समय आप दुनियावी जिम्मेदारियों से मुक्त और कदाचित बड़ों और माँ-बाप के प्यार और आकर्षण का केन्द्र बने रहते हैं। इस आयु में आप नव उर्जा की परिपूर्ण और अपने मित्र-सखाओं के निस्वार्थ प्रेम भाव से सरोबोर रहते हैं।

बचपन के इसी ही खंड का एक वाकया, जो मेरी स्मृति में अंकित है। मेरा गाँव, जो कि कोटखाई से 10 कि० मी० की दूरी पर सुंदर हरी भरी पहाड़ी वाला इलाका है। सेब की उन्नत किस्म और अच्छी पैदावार के लिए मशहूर है। गाँव के ऊपरी भाग में हल्की ढ़लान धार पहाड़ी, तरो-ताजा हवा एक सुंदर मनोहारी दृश्य प्रस्तुत करता है। वर्ष 1995 की सावन ऋतु चल रही थी। सेब की फसल का आगामी 2-3 सप्ताह से तुड़ान शुरू होने वाला था। घर के लोग इस प्रबंधन की वजह से कुछ व्यस्त से रहे थे। गाँव के हम उम्र यानि 10 से 12 साल के बच्चों का झुंड दोपहर के समय गाँव की ऊपरी धार पर खेल कूद के निज आन्नद में डूबा हुआ था। इस प्रकरण से वातावरण में हँसी फुआर और शोर ध्वनियों से पुलकित था। बच्चे आपस में दौड़ते, हँसते, चिल्लाते और खुश होते। बचपन के इस खेल कूद में समय गुजरने का तो कदाचित अहसास नहीं हो पाता, बस देर होने पर माँ बाप के बुलावे की आवाजें ही घर लौट जाने का वाइस मान्य होती है। और बहुधा शुरू की एक-आद बुलाने की आवाजों को अनसुना कर टाल भी दिया जाता है।

सभी बच्चों का झुंड खेल व हास्य में लीन था कि हमारे शोर से आकर्षित हो कर ना जाने 3-4 कुते भौंकते हुए तेजी से हमारी तरफ लपके। कुतों के इस हमले से पूरा झुंड सिहर उठा और ऐसा लगा कि हमारी जान पर ही बन आई है। इस मुसीबत से पार पाने के लिए बाल-झुंड धार से गांव की तरफ सरपट चिल्लाते हुए भागा। इसी भाग दौड़ में अचानक बीटू, घास से फिसल कर एक कुंए में धड़ाम से जा गिरा। यह कुंए सेब की फसल पर स्प्रे करने के लिए दलान पर निर्मित किये होते हैं जो कि 7–8 घड़े होते हैं। कुत्ते तो हमें खदेड़ कर किसी दूसरी तरफ निकल चुके थे पर हम सब एक नई मुसीबत का शिकार हो चुके थे।

बीटू के गिरते ही उस की छोटी बहन रेनू ज़ोर-2 से रोने लगी और हम सभी बच्चे भयभीत होकर गाँव से बड़ों को मदद के लिए ज़ोर-2 से पुकारने लगे। हमारी चीख-पुकार सुन मेरा बड़ा भाई दौड़ता हुआ आ पहुँचा।

वस्तुस्थिति जान कर वह कुंए में कूद गया और बीटू को बाहर निकाल लाया। पानी में 5-6 मिनट तक रहने के कारण बीटू तो बेहोश हो चुका था। बड़े भाई ने उस को उल्टा लिटा कर पानी निकाल दिया और अपने मुंह से उस के मुख में साँस भरने लगा। उसके इस प्रयास से कुछ ही देर में बीटू चेतन सा हो गया। अब तक गांव से बच्चों के सभी अभिभावक और दूसरे लोग आ गये थे।

एक और नई मुसीबत आने वाली थी। कुंए में गिर जाने से आहत बीटू की माँ ने अन्य बच्चों के माँ-बाप पर यह आरोप लगाना शुरू कर दिया कि उन के बच्चों ने ही बीटू को कुंए में धक्का दिया होगा। मेरी माँ और चाची से भी वह लड़ने लगी। हम बच्चों ने उन्हें बताया कि बीटू फिसल कर खुद गिरा है, किसी ने धक्का नहीं दिया। परन्तु वह अनसुना कर झगड़ा करती जा रही थी। मेरी माँ और चाची ने इस झगड़े की वजह से हमारी खूब पिटाई कर डाली। तभी वहां बड़े लोगों ने बीटू को उपचार हेतु साथ के गांव में अस्पताल में ले जाने की सलाह दी। बीटू को उपचार, दवाई दिला एक घंटे में वापिस गांव लाया गया, अब वह ठीक था। सायंकाल सभी बच्चे अपने घरों में सहमे से रहे। अगले दिन देवता के मंदिर में देवता को धन्यवाद करने व भोग भेंट अर्पित करने हेतु सामूहिक रूप से सभी गांव वासी वहां गये। खास तौर पर बीटू के साथ-साथ अन्य बच्चों को आशीर्वाद दिलवाया गया व फिर प्रसाद के रूप में हलवा पूरी बांटा गया। मंदिर प्रांगण में बाल झुंड अब सहज और खुश था।

सुधि पाठकों! आज भी 30 वर्ष उपरांत, बाल्यकाल की उस घटना की याद आने पर उन असहज पलों (खेल कूद के आन्नद में लीन, अचानक कुतों का हमला, भागते हुए बीटू का कुंए में गिरना, बीटू की माँ का हमारी माँ से झगड़ा करना और माँ चाची का द्रवित हो कर हमारी खासी पिटाई कर देना) की स्मृतियां दिलो-दिमाग में घूम ही जाती हैं।

विराट प्रकृति

सुश्री समता खानचंदानी
हिंदी अनुवादक

पत्रिका हिम-प्रभा में लिखने के लिए जब मैं मन बना रही थी, पृष्टभूमि पर विचार करते हुए इसी असमंजस में थी कि क्या लिखूं....हिमाचल प्रदेश की मौसमी दशा और अवस्था या फिर वर्तमान सामाजिक संक्रमण काल ...दोनों ही मन को तुलना करने पर विवश करते है। सामाजिक निरंकुशता के इतने उदाहरण सामने है कि जिस समाज की व्याख्या भारत दर्शन में की जाती रही है...अब वो कहीं नज़र नहीं आती। प्राकृतिक भयावहता भी अपने उन्माद पर दिखाई देती है। कारणों के सिरे का पीछा करते हुए तो कहीं पहुंच नहीं पाई.. क्योंकि गतिशीलता की पहली शर्त ही यही है कि पुराने प्रतिमान खंडित होते है और नए की स्थापना होती है...जिसे आज हम 'आधुनिकता' कहते हैं । बदले संस्कारों और पुरातनपंथी मान्यताओं का नया कलेवर सामाजिक प्रथाओं के साथ-साथ पर्यावरणीय परिवर्तनों को भी आमंत्रण देता है। इसी परिवर्तन और संक्रमण बेला में आज हम खड़े है... जहां राह ढूंढ़ना कठिन है। आपकी हर सोच को समर्थन मिलेगा... उचित-अनुचित में भेद जानना किसी अनुसंधान से कम नहीं रहा।

भारतीय मनीषियों ने हितोपदेश एवं पंचतंत्र की जातक कथाओं से जनमानस में नैतिक-मूल्यों की स्थापना पर बल दिया था। मर्यादा का सामाजिक परिप्रेक्ष्य में क्या महत्व है.. उसका उन्हें भान था । मर्यादा का मूल हमारे पौराणिक महाकाव्य की जड़ों को सींचता है... जिसकी स्थापना इक्ष्वाकु वंश की पीढ़ियों के साथ गढ़ती गई होंगी... मर्यादा पुरुषोत्तम ने सामाजिक मान्यताओं को आदर्शों को परिपाटी में ढालने के लिए स्वयं को उदाहरण बना दिया। नैतिक आदर्शों की स्थापना ने निर्गुण को मूर्त रूप में प्रतिस्थापित कर दिया होगा...तभी तो अपने आराध्य की छवि आवश्यक बन पड़ी।

विशाल जलराशि में मार्ग निकालने के लिए समुद्र को देवता के रूप में चित्रित करते हुए उनका पूजन हो या शक्ति की प्राप्ति के लिए शिव का आह्वान हो... निराकार को आकार में परिकल्पित करने का कारण क्या यही नहीं था.. कि सशरीर दो आंखे हमें देखती.. परखती है... दो बाजुओं में हमें तारने का सामर्थ्य है.. और दो भृकुटियों के क्रोध से ऊपर तनने से हम अस्तित्व-विहीन हो सकते है। द्वापर में फिर प्रतिमान बदले... धर्म ने शस्त्र उठाए, अपने कुल के विरूद्ध आ खड़े हुए...और स्वधिकारों की जागृति रोपित हुई। अंततोगत्वा मर्यादा की स्थापना की आवश्यकता ही किसी समाज की नींव जो है।

चंद्रमा की सोलह कलाओं को आराधना की धूरी बना कर हम अपने धार्मिक कर्तव्यों की पूर्ति करते हैं। कभी पीपल पर कभी वटवृक्ष पर पचरंगी धागे से या चटक लाल चुनर से अपने मन को बांध देते है... पूजनीय वृक्षों के पत्तों का तोरण घर में शुभ को आमंत्रित करता है.. लाल पीले फूलों की सजावट अपने आराध्य को प्रसन्न करने में बड़ी भूमिका निभाती है। हम अपने संस्कारों में ... कारण जानते- न जानते भी प्रकृति को स्वयं से पृथक नहीं कर सकते है। यदि गहरे उतारे.. तो जानेंगे कि ये हमारी कृतज्ञता है... इस धरती... इस प्रकृति के प्रति, जिसे हमारी प्रथाओं में इसी लिए रचा गया कि हम अपनी जड़ों को ना भूलें.... इसकी शक्ति के आगे सदैव नत-मस्तक रहें । किंतु ये भय ही हमारे भ्रम का कारण भी बन गया है क्योंकि इन सब के बावजूद जो सर्वोच्च भावना हावी है, वो है स्वयं का कल्याण। पहले दूसरे का हित आगे था.. अब... स्वयं को सबसे आगे रखने की लालसा। वसुधैव कुटुम्बकम अब एक पुरातन पंथी विचारधारा का शब्द है, जिसकी उपमा तो दी जाती है परन्तु व्यवहार में उतारा नहीं जाता।

संतुलन की अवधारणा का जन्म यही से तो होता है। अति वृष्टि...पहाड़ों का सरकना... बाढ़... तापमान में असंतुलन .. ये सारी विकरालता केवल प्राकृतिक नहीं है, बल्कि कहीं-न-कहीं मानव की अव्यवस्थित विकास योजनाओं, जंगलों की कटाई और पहाड़ों के अंधाधुंध दोहन का परिणाम भी है। प्रकृति चेतावनी देती है कि यदि संतुलन भंग होगा, तो उसका प्रतिकार भी उतना ही प्रचंड होगा। 'अति सर्वत्र वर्जयेत' का सूत्र भी यहीं से प्रतिपादित होता है।

प्रकृति इस धरा की जननी है.. वो प्राण देती है...पोषित करती है... और शिक्षित भी करती है। हमारे प्राचीन ग्रन्थ कहते है 'यद् पिण्डे तत्त् ब्रह्माण्डे,' अर्थात् जो कुछ मानव शरीर में सूक्ष्म या स्थूल रूप में है, वही विराट प्रकृति में भी है। महर्षि भृगु जब कहते हैं कि प्रकृति को जानना ही ब्रम्हाण्ड को जानने की दिशा में पहला कदम है तो वे अतिश्योक्ति नहीं करते। महाकवि कालिदास ने जब ऋतुसंहारम में प्रकृति की अभिव्यंजना में मानव हृदय का प्रतिबिम्ब रूपित किया, तब निश्चय ही विद्वजन अद्वैत वाद की पृष्ठभूमि गढ़ रहे होंगे।

प्रकृति के कई रूप कभी हमें सुखद.. कभी अचरज... कभी आत्मीय... तो कभी विषाद की अनुभूति से भर देते है। आज के मशीनी युग में हम सभी एक ही मार्ग पर है... जिसका अंत बिंदु शायद ही कोई जानता हो। मैं इसे विकट स्थिति कहूंगी.. क्योंकि हमने स्वयं को एक ऐसे कोकून में समेट लिया है.. जिसमें चौतरफा दिशाओं से रास्ते नहीं खुलते.. जब वही सोचते.. देखते है.. जो हमें पसंद है.. यूं कह लें कि ज्ञान के मार्ग बाधित है.. क्योंकि संसाधन हमने बढ़ा लिए है.. शायद यही कारण है कि हम अब घटना को घटित होने के रूप में नहीं देखते बल्कि आपबीती के रूप में देखते है। शायद हमें अपने उपनिषदों की ओर लौटना होगा...जो 'नेति-नेति' का उपदेश देते है.. माने, अंतिम सत्य किसी एक तत्व या स्वरुप में बंधा नहीं है.. इसके कई उद्घाटन है। हमें अपनी अंतर्दृष्टि खोलने मात्र की देर है।

पानी ख़त्म होने को है

ओम प्रकाश डोई
सहायक निदेशक (राजभाषा)

चिलचिलाती धूप में
वह अधेड़ दौड़ा
लोगों के बीच से,
जैसे एक तात तटके
पैसा कमाने दौड़ता है
एक फौजी
अपना देश बचाने दौड़ता है।
हांफते हुए उसने
नल बंद किया
गर्व किया यह सोचकर
अपनी भावी पीढी के लिए
उसने थोडा पानी बचा लिया।
सुबह ही सुना था
एक रईस से
समाचार पढ़ते हुए
"पानी ख़त्म होने को है"
जिसने नल चालू छोड़ दिया था।

जीवन का चक्र

राहुल मेघवाल
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

किशोर दिनों में वक़्त बहुत था,
पर जेब सदा ही सूनी थी।
सपनों की डोर हवा में उड़ती,
पर उड़ान अधूरी, अधूरी थी।
आज उमर के इस पड़ाव पर,
जेब भरी है, साधन पास।
पर वक़्त फिसलता रेत समान,
ज़िम्मेदारियों का है मधुमास।
बचपन में जो माँ-बाप कहते,
बोझिल लगती थी हर सीख।

अब वही शब्द जब मैं दोहराता,
बेटा मुस्काए, नादान अतीत।
सोचता हूँ, कैसा अद्‌भुत चक्रहै,
कैसे किरदार बदलते जाते।
कल मैं संतान था, आज पिता हूँ,
कल मेरे पदचिह्न वो दोहराते।
और हर नए अनुभव के संग
मन श्रद्धा से भर उठता है।
माता-पिता की थकी निगाहों में
अब अपना ही प्रतिबिंब दिखता है।

राजस्थान

इंद्र जीत मीणा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

रेत के कणों में बसी, वीरों की पहचान,
मरुभूमि की धड़कन है मेरा राजस्थान।
किले हवेलियां, महलों की शान,
इतिहास गाता है गौरवमयी गान।
चमकती धूप में रेगिस्तान की लहर,
ऊंट की चाल में झलकता है सहर।
लोकगीतों की मधुर तान, पधारो म्हारे देश,
घाघरा-चुनरी में सजी, संस्कृति विशेष।
घाट की रेत से लेकर अरावली की गोद,
मेहमानवाजी यहां है सबसे बड़ी दौलत और मोद।
राजपूताना साहस, प्रेम व अभिमान,
सिरमौर है भारत का मेरा राजस्थान।

बचपन की मस्ती

कमला देवी
लेखापरीक्षक

जब हम छोटे थे,
हर दिन बहुत मस्ती करते थे।
ना कोई चिंता, ना कोई काम,
हर दिन खेलते रहते थे शाम से शाम।

दोस्त हमारे साथ थे प्यारे,
हर दिन मिलते, बनते सहारे।
कभी हम जाते उनके घर,
कभी वो आते हमारे घर।
साथ में खाते, साथ में खेलते,
छोटी-छोटी बातों पर हंसते और झगड़ते।

मां बुलाती अब घर चलो,
पर दिल कहे थोड़ा और खेलो।
पापा की गोद, दादी की कहानी,
सब लगते जैसे एक प्यारी सी निशानी।
हर तरफ प्यार भरा,
बचपन का समय कितना अच्छा था।

अब जब याद वो दिन आते हैं,
आंखे भी थोड़ी नम हो जाती है।
काश! वो दिन फिर लौट कर आएं,
हम फिर से बच्चे बन जाएं।

दर्द पहाड़ों का

जगदीश कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

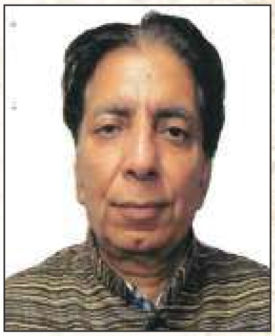

पहाड़,
नहीं बुलाना चाहते तुम्हें
अपने पास
अब की बार.......
बहुत गुस्से और पीड़ा में हैं....
बिलख रहे....तड़प रहे हैं...
सिसक रहे....कराह रहे हैं..,
जेसीबी का तीखा लंबा
नुकीले पंजो वाला खंजर....
जो
मारा है उनकी पीठ और आंतो में
तुम्हारे ही हाथों ने
तहस नहस कर दिए हैं
उनके नजारे....
पहाड़ अब नहीं ओढते...
मखमली सफेद चादर...
जिनसे ढका होता था उनका
सारा बदन....

अब के नंगे हैं पहाड़...,
उदास है यह सोच-सोच के डरे सहमें हैं
कहीं फिर से न आ धमको तुम
बिन बुलाए मेहमान की तरह....
इस बार....
दर्द पहाडों का महसूस किया है
नदियों ने...., बादलों ने....,
धरती ने....,
इसलिए ....
फट रहे हैं बादल,
उफान पर हैं नदियां....
बदला ले रही है....
तुम्हारी ही तरह...मिजाज बदले.....,
धरती भी धंस रहीं.....,
खिसक रही है अपनी जगह से ...
डर है कहीं
भूचाल न आ जाए....न हो जाए जल प्रलय
अबकी बार .....

पहाड़ों की चीख
सुनी है प्रकृति ने...
रौद्र रूप धर लिया है ....
विध्वंस के लिए....
कमर कस ली है
तुम्हारे विनाश के लिए....
एक-एक चोट का प्रतिकार ले रही है
कुदरत.....
जिन हाथों से काटा था उसके वृक्षों को
फोर लेन बनाने के लिए....
आज उन्हीं हाथों को काट रही है....
गब्बर का
शोले फ़िल्म का एक संवाद यहां
बहुत सटीक बैठता है.....
"ये हाथ मुझे दे दे ठाकुर...,"
ठाकुर नहीं नहीं करते....
कहता हुआ हो जाता है अपाहिज....
काट देता है गब्बर...
ठाकुर के दोनों हाथों-भुजाओं को...
आज...
प्रकृति भी गब्बर जैसे बनती दिख
रही है....

छीना था जो जो उससे....तुमने
वहीं वापस ले रहीं हैं....
फोर लेन तो क्या
टू लेन भी नहीं बचेगा
चलने के लिए....,
क्रूरता तुमने की थी प्रकृति पर...,
अब प्रकृति क्रूर बनी है....कह रही है,
नहीं चाहिए पहाड़ों को तरक्की का चोला
उन्हें चाहिए शांति, बर्फ से ढका लिबास....
जो तुमने कर दिया है
तार...तार....,
इसलिए नहीं चाहते वो तुम्हारा
चेहरा भी देखना.....
जैसे भी है....
जितना भी है..
दूर से ही हाथ जोड़ खड़े हैं
पहाड़...., कर रहे नमस्कार
अब की बार.....,
नहीं बुलाना चाहते तुम्हें अपने पास.....!
तुम जानो न जानो
बेजुबान जान गए हैं अब
दर्द पहाड़ों का.....!

लड़की

अन्तमा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

चलो तुम्हें एक बात बताती हूं,
लडकी होना कैसा है, ये कहानी सुनाती हूं।
मां के पेट में ही मैं डरती हूं,
एक बार बस दुनिया में आने दो, ये विनती करती हूं।
मेरी बात कहा ही सुनी जाती है,
हज़ारों में कुछ ही खुशनसीब इस दुनिया में आ पाती है।
सिर्फ दुनिया में आने से ही कहाँ मेरा संघर्ष ख़त्म होता है,
बचपन से ही सिर्फ तानों का बोझ दिया जाता है।
रात में निकलूं तो चरित्र पर सवाल उठा दिया जाता है,
दहेज़ कम मिलने पर मुझे जला दिया जाता है।
घर का कामकाज भी ऑफिस के बाद मुझे थमा दिया जाता है,
सब के ताने सुनके, सब को खुश रख के भी पराए घर का मुझे बता दिया जाता है।
जब कभी अपने मायके जाती हूं तो गैरों सा व्यवहार किया जाता है,
जिस आंगन में सारा बचपन बीता वह भी मेहमान बना दिया जाता है।
एक अच्छी पत्नी, बेटी, बहु बनने में ही सारा जीवन बीत जाता है,
और एक लड़की का जीवन सपने बुनते बुनते ही ख़त्म हो जाता है।

धरती का श्रृंगार

श्री विष्णु शर्मा
लेखाकार

बारिश की बूंदों ने जब धरती को छुआ ।
हर एक कण जैसे नया जीवन पा गया ।
मिट्टी की खुशबू में सुकून है धुला ।
हरी घास भी जैसे मुस्कुराई जवाँ ।

स्वच्छ हवा में ताजगी की रवानी है।
पत्तों पर मोती चमकती निशानी है ।
झरनों का संगीत बहती धारा सुनाती है ।
सभी रंगों ने मिलकर बनाई कहानी है।

सूरज ढलता है रंगीन आसमान में
संध्या की सुनहरी लालिमा भी है साथ में ।
सुनहरे गुलाबी नीले और लाल रंग ।
संध्या की चादर ओढ़ है प्रकृति संग।

साफ स्वच्छ यह धारा साफ है यह जलधारा।
जीवन का मधुर संदेश लेकर यह आया ।
बारिश के बाद की यह धरती है प्यारी ।
सपनों जैसी सजी है सारी।

नया साल

रमेश चंद्र शर्मा
पिता- विष्णु शर्मा, लेखाकार.

ये जिंदगी का सफर है, साहब,
सिलसिला यूं ही चलता रहेगा,
न तो 31 दिसंबर को खत्म होगा,
न ही 1 जनवरी से शुरू होगा।

इन झंझटों में उलझकर रहने वालों,
फ़ालतू शख्सों का काम है ये,
मेहनतकश से पूछो,
श्रम करना, उसकी तक़दीर है ये।

जिसे देखो, अंग्रेजी न्यू ईयर में डूबा,
अपने कंधों पे परदेशी कैलेंडर ढोता,
भूल बैठा है स्वदेशी पंचांगों को,
सदियों से चले विधान को।

बदल डालो ये करतूतें,
बदल डालो ये तस्वीरें,
असलियत में नया साल तब होगा,
जब हर घर में इक नया विश्वास जागेगा।

तिलक होगा, चंदन होगा,
बुजुर्गों का अभिनंदन होगा,
सोचो इस परिवर्तन से क्या कुछ नहीं होगा?

संवारो नसीब, मेहनत रंग लायेगी।
संभल जाओ ऐ हमवतनों।
नए सुप्रभात की किरण एक दिन जरूर आएगी।

क्या आया जमाना

सुनीता देवी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

क्या आया जमाना-क्या आया जमाना
अब सब कुछ है सबको बताना
चाहे वो जीना हो, मरना हो, खाना हो या पीना हो
क्या आया जमाना- क्या आया जमाना।

आज मृत्यु हो गई या हो गई हत्या
सबने अपने मोबाइल उठाए बस मुर्दे की
अब आई श्यामत अब लगे लोग व्लोगस
बनाने, जब ये मरा तो इसका मुहं टेढा था
उसके मुहं में स्माइल थी लगे दुनिया को दिखाने
क्या आया जमाना-क्या आया जमाना।

कोई बीमारी हो या जन्मदिन लगे हैं बताने
नये नौजवान तो रील चक्कर में लगे हैं
अपनी जन गंवाने कोई गिर गया तो उसे उठाते नहीं
सीधे मोबाइल लिया और व्लोगस बनाते हैं
दर्द में तड़पने वाला तड़पता रह जाता है
और इन्सान मोबाइल लेकर कमाने के चक्कर में
उसका वीडियो बनाता है
क्या आया जमाना- क्या आया जमाना।
कोई नाच रहा है, कोई गा रहा है,
कोई इसके चक्कर में जान गंवा रहा है,
अध्यापक भी अब डायरी की जगह
मोबाइल पर लगे हैं होमवर्क बताने,
कहते हैं बच्चों को मोबाइल न दो
बच्चे जाते हैं बिगड़,
अध्यापक को होमवर्क मोबाइल पर है बताना
मोबाइल पर नेट का जरूरी है डलवाना
क्या आया जमाना- क्या आया जमाना।

पहले लोग शराब को ही नशा मानते थे
क्या मोबाइल भी एक नशा नहीं है
जिससे वह अपनी आंखे रील
बनाने के चक्कर में अपनी जान गवा रहे हैं
क्या आया जमाना- क्या आया जमाना।

सब झूठ हैं

नेहा कुमारी
सहायक लेखा अधिकारी

ये आँखें जो देखती हैं,
वो सच मान बैठती हैं।

उस सच के आने बाने को बुनती जाती हैं,
उसे ऊंचाई तक लेकर जाती हैं,
लेकिन जब पता चलता है सच,
तो धाराशायी होकर गिर जाती हैं।
तब पता चलता है,
सब झूठ है।

ये मन जो जाल बुनता रहता है,
उलझाता रहता है हमें,
ऐसी उलझन जिससे निकलना
मुश्किल हो जाता है,
जब ये जाल टूटता है, तो
पल भर में सब बिखर जाता है,
तब पता चलता है,
सब झूठ है।

ये दिमाग जो सोचता रहता है,
झूठ को सच बना देता है
जब ये सोच का बादल हटता है,
तब पता चलता है,
सब झूठ है।

ये मन और आँखों के
परे भी एक जीवन है,
जिसे कोई नहीं जानना चाहता।
हम भागते है उसके पीछे
जिसकी जरूरत हमें रत्ती भर नहीं,
समझ नहीं पाते हम
मन के जाल को,
जान नहीं पाते
उन आँखों की चाल को,

और कब तक यूँ ही भागते रहेंगे हम,
किसी और के पीछे।
कभी-न- कभी तो मुड़ना होगा
खुद की ओर।
वहाँ, जहाँ कोई झूठ नहीं होगा,
न मन होगा न आँखें होंगी,
होगा, तो सिर्फ हमारा वजूद।

हम जान पाएंगे कि, हमारा
खुद के साथ रहना,
कितना ज़रूरी है।
हम जान पाएंगे कि
हम अकेले जी सकते है,
हम कोसेंगे नहीं खुद को,
लहू-लुहान नहीं करेंगे अपने हृदय को,
सारे आँसू व्यर्थ नहीं बहाएंगे।
वक्त तो जा ही रहा है,
अब मुड़ना होगा खुद की ओर,
क्योंकि वहाँ झूठ नहीं,
सिर्फ सच है।

"त्रिउंड की यादगार यात्रा"

विशाल राठी
लेखाकार

छुट्टियों की एक सुबह सुहानी,

हम निकले दोस्तों की थी मनमानी।

मंजिल थी हिमाचल की प्यारी वादी,

मैकलोडगंज जहां बसती है शांति और साधु की छाया।

धर्मशाला की ठंडी हवा ने छू लिया मन,

हर मोड़ पर दिखा प्रकृति का सुंदर धन।

ऊँचे-ऊँचे देवदारों की पंक्तियाँ,

नीले आसमान तले हरी-भरी घाटियाँ।

थोड़ी देर रुके, चाय की चुस्की ली,

हँसी-मज़ाक में कब वक्त निकल गया, पता ही नहीं चला जी।

फिर तैयार हुए हम ट्रेक की ओर,

त्रिउंड बुला रहा था जैसे कोई सपना पुकारे।

पगडंडियों से होते हुए चढ़ते गए,

हर कदम पर नज़ारे दिल में बसते गए।

पहाड़ों पर बर्फ़ की चादर बिछी थी,

जैसे किसी चित्रकार ने खुद रंग भरे थे।

चलते-चलते जब साँसें थोड़ी थकी,

तो प्रकृति ने हमें राहत की झपकी दी।

झरनों की मीठी आवाज़ें सुनाई दी,

और बादलों ने नीचे आकर मुस्कराहट दी।

शाम ढली, सूरज ने अलविदा कहा,

आसमान ने केसरिया रंगों का साज सजाया।

त्रिउंड की चोटी से वो सूर्यास्त देखना,

जैसे हर चिंता को कहीं दूर भेजना।

रात को टेंट लगाए हमने,
आग के किनारे सबने अपने जज़्बात सज़ाए।
खाना खाया, गिटार पर गाने गाए,
फिर तारों से सजी रात में खुद को खो आए।

तारों की छाँव में देखे कई टूटते तारे,
हर तारा एक ख्वाहिश, हर ख्वाहिश हमारे प्यारे।
चांदनी रात थी बिल्कुल शांत,
जैसे सारा ब्रह्मांड हो हमारे संग।

सुबह हुई, सूरज ने पहाड़ों से झाँका,
बादलों की रज़ाई में धरती मुस्कुराई।
वो नज़ारा था ऐसा, जो शब्दों में ना आए,
सिर्फ़ दिल ही समझे, आँखें बस निहारे जाएँ।

वापसी की राह पर जब उतरे नीचे,
हर मोड़ पर मन रुक-रुक कर पीछे मुड़ें।
दोस्तों संग बिताए वो पल अनमोल थे,
त्रिउंड की यादें अब दिल के सबसे पास के बोल थे।

अब शहर की भीड़ में हैं हम फिर,
पर मन तो वहीं है, उस ट्रेक की चोटी पर।
जब-जब आँखें बंद होंगी,
वहीं का सूरज, बादल और तारे सामने होंगे।

बर्बाद हो जाओगे

अरुण कुमार
लेखापरीक्षक

सम्भल जाओ की अब भी वक्त है, न अंजान तुम बनो,

बर्बाद हो रहे हैं युवा और कई घर, न हैवान तुम बनो।

लगा कर आग इस चिट्टे की लाखों घरों में तुम कहां खुद बच पाओगे,

बर्बाद होगी अगर युवा पीढ़ी, तो तुम भी बर्बाद हो जाओगे।।

मत सोचो कि इस दलदल से अंजान तुम्हारा घर होगा,

आज अगर किसी और का होगा बेटा बर्बाद तो कल तुम्हारा भी होगा।।

कमा लो चाहे कितना इस काले धन को लोगों को बर्बाद करके,

लेकिन सोचो जरा क्या एक कतरा भी अपने साथ ले जा पाओगे।।

अगर आग खुद के घर तक पहुंची तो श्मशान हो जाओगे।

बर्बाद होगी अगर युवा पीढ़ी तो तुम भी बर्बाद हो जाओगे,

बर्बाद होगी अगर युवा पीढ़ी तो तुम भी बर्बाद हो जाओगे।।

वो नारी है

कल्पना यादव
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

वो नारी है,
सब कर सकती है जो मर्द कर सकता है,
मगर ना जाने क्यूं,
फिर भी वो अबला और बेचारी है!
वो नारी है।

अपना घर छोड़ कर पति के घर जाती है,
वहां हर नए रिश्ते को दिल से अपनाती है,
सुबह से शाम तक उनकी हर जरूरत का ख्याल रखती है,
उनकी हर इच्छा को सर आंखों पर रखती है,
अब दो घरों की इज्ज़त का ख्याल रखना उसकी ज़िम्मेदारी है,
फिर भी वो अबला और बेचारी है!
वो नारी है।

एक नई जान को इस दुनिया में लाती है,
बीस हड्डियां टूटने जितना दर्द झेलती है,फिर भी मुस्कुराती है,
लड़का होगा या लडकी, ये सोच कर ससुराल वालों से घबराती है,
लड़की होने पर सबके ताने चुपचाप सह जाती है,
क्योंकि अब वंश को आगे बढ़ाना उसी की ज़िम्मेदारी है,
फ़िर भी वो अबला और बेचारी है!
वो नारी है।

पैदा होने से पहले समाज से लड़ती है,
दुनिया में आकर लोगों की गंदी नज़रों से बचती है,
बराबरी का हक पाने के लिए रोज़ ज़माने से लड़ती है,
लडकों से कम नही है हम, ये परीक्षा हर मोड़ पर देनी पड़ती है,
दुनिया में आने से पहले से लेकर जाने के बाद तक उसका संघर्ष जारी है,
फिर कैसे वो अबला और बेचारी है!
क्योंकि वो नारी है।

"अभी मजदूर नीचे बैठा है"

अभिमन्यु कमलेश राणा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

होंठ
पैरों के तलवे
पैरों तले जमीन
तीनों एक से हो गए
छत नहीं थी
शायद से कसे हो गए
जो गए
मरहम लाने
खो गए
शायद

छांव में सो गए
ऐसे कहां
जख्म भरा करता है
बैठ सिंहासन पर
क्या हरा हरा करता है
सावन से
आंखें मीचे बैठा है
निकलवा कुर्सियों का टेंडर
अभी मजदूर नीचे बैठा है

आत्म शक्ति बोध

संजय शर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

कब तक शोक मनाओगे
कब तक रोना रोओगे

इस जीवन पथ पर तुम अकेले हो
करो संघर्ष, झकझोर दो तुम इस आलस को

नाकामी की जंजीरों में कब तक जकड़े रह जाओगे
कब तक भाग्य को दोषी मान कर जीवन निर्वाह करते रह जाओगे

मत भूलो सियारों के बीच रहकर भी सिंह शावक अपनी औकात नहीं भूलता
आत्मशक्ति बोध होने पर शिकार पर हमला करना नहीं चूकता

कहां बजरंग बली मां सिया से मिलने लंका जा पाते
आत्मशक्ति बोध बिना कहां विशाल समंदर लांघ पाते

रेगिस्तान की तपतपाती गर्मी में भी बबूल का पेड़ लहलहाता है
बिना संघर्ष के जीवन जीने का आनन्द कभी नहीं आता है

झंझावत जब आता है, बाज नहीं घबराता है
चिड़ू पखेरू जब डरकर घोसलों में छुप जातें हैं, तब
बाज अपने हौसलों की उड़ान भरकर आसमान की ऊंचाईयों को छूता है

एक आज़ादी... ऐसी भी

शैलेश सोनी
सहायक लेखा अधिकारी

ठिठुरता बदन
सिसकती साँसें,
नींद की झलक
उन खुली आँखों में,
होठों पर प्यास
एक रोटी की आस
दुआओं की भीड़,
उसकी बातों में....
किसी की तिरछी नज़र
किसी की बोली उस पर,
किसी का मना करना
किसी का फटकारना
और किसी का मुँह फेर के
वहाँ से चले जाना.... फिर भी,
कुछ मिल जाने की उम्मीद
उसे आते जाते लोगों की आहटों में....
इतने में मिला कुछ खाने को
थोड़ा भूख मिटाने और मुस्कुराने को
ज़िन्दगी चंद सिक्कों की मोहताज नहीं
फिर भी सड़कों पर दौड़ती हैं... ऐसी ज़िन्दगी कईं
वक्त लग गया ये समझने में, जैसे
खुशियाँ खरीद ली हो उसने
चंद सिक्कों में,
पंख फैलाकर भी उड़ने को तैयार नहीं
आज़ाद होकर भी हम आज़ाद नहीं
एक तरफ सारी सुविधाएँ और
दूसरे ग्रह पर जाने की तैयारी है
दूसरी तरफ एक बच्चे की भूख को रोटी नहीं,
ये कैसी आज़ादी है....
सपने उस नन्हीं आँखों में भी पलते हैं
हर रात वो भी एक नींद को तरसते हैं
क्या मुफ़्त की बिजली और पानी
उन्हें दो वक्त की रोटी दे पायेगा,
क्या साफ सुथरा देश

उसकी आँखों में नींद लाएगा,
सिर्फ चिल्लाने से देश का भला नहीं होगा
हाँ... मगर एक कदम, खुद का,
बढ़ाने से ज़रूर कुछ होगा
आओ इस स्वतंत्रता दिवस को
स्वतंत्र रूप से मनायें
कम से कम एक भूखे बच्चे को रोटी खिलाएं
एक कदम हर कोई बढ़ाये
तो हर तरफ खुशहाली होगी
हर सुबह आज़ादी और
हर शाम दिवाली होगी...
हर सुबह आज़ादी और
हर शाम दिवाली होगी ॥

"मैं और मेरा मन"

शालू
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

"मैं और मेरा मन – रोज़ की बहस"
हर सुबह एक जंग सी होती है,
आईने में मैं... और सामने मेरा मन होता है।
मैं कहता हूँ – उठ, कुछ कर दिखाना है,
मन हँसता है – किसे दिखाना है?
मैं बोझ गिनाता हूँ सपनों का,
मन गिनाता है पल ठहरने के।
मैं दौड़ता हूँ मंज़िल की ओर,
वो कहता – चल कुछ देर बैठ, ज़रा साँस ले।
मैं चिंता की गठरी पीठ पे ढोता हूँ,
मन कहता – छोड़ इसे, कुछ पलों में जी ले।
मैं भविष्य की फिक्र में खोया रहता,
वो आज में मुस्कुराने को कहता।
मैं चाहता हूँ हर काम में परिपूर्णता,
मन चाहता है थोड़ी सी शांति।
मैं डरता हूँ हार से, गिरने से,
वो कहता है – गिरकर ही तो जीना आता है।

मैं कहता हूँ – लोग क्या सोचेंगे?
मन चुपके से कान में फुसफुसाता –
'जब तू खुद से नहीं डरता,
तो दुनिया की सोच से कैसा वास्ता?'
कभी मैं जीत जाता हूँ,
कभी वो मनुहारों से मना लेता है,
कभी चुप्पी में समझौता हो जाता है,
तो कभी खामोशी भी चीख सी लगती है।
मैं सोचता हूँ क्या सही है क्या गलत,
मन बस कहता है – चल, कुछ पल अपने साथ बिता।
मैं कोशिश करता हूँ सबको खुश करने की,
मन कहता है – पहले खुद से दोस्ती कर।

मैं गिनता हूँ असफलता के किस्से,
मन कहता है – ये तो सफलता की सीढ़ियाँ हैं।
मैं डरता हूँ बदलाव से, अनजान राहों से,
मन कहता – डर को समझ, वहीं छुपी है नई उड़ान।

मैं सोचता हूँ सफलता का माप क्या है,

मन कहता है—खुशियों की मीठी हँसी में छुपा इसका साया है।

मैं कहता हूँ – ज़िंदगी इतनी कठिन क्यों है?

मन मुस्कुराता है— क्योंकि इसमें ही जीवन की खूबसूरती है।"

यह बहस निरंतर है, शायद जीवन भर चले,

पर इस द्वंद्व में ही तो असली जीवन जले।

झगड़े और समझौतों में छुपी होती है राह,

इनमें मिलती है ज़िंदगी की असली चाह।

मैं और मेरा मन – दो राहें, दो सोच,

पर मंज़िल तक साथ-साथ चलते हैं, यही तो है खोज।

भगवान के बोल

अरुण कुमार
लेखापरीक्षक

एक दुखीयारे ने भगवान से कहा कि "भगवान आप इस धरती पर कब आएंगे, कब धरती से पापियों का नाश करेंगें, कब आप ज्ञान देगें।" तब भगवान ने कहाः-

मैंने तो तुम इन्सानों को माटी का बनाकर भेजा था,

तुमने तो मुझे ही माटी का बना दिया,

मैंने कौन सा धर्म बनाया था, जो तुमने अनेकों धर्म बना दिए।।

शबरी को तुम भूल गए जिसका जूठा मैनें खाया था,

तुमने तो दो घूंट पानी के लिए इन्सान को अछूत बना दिया।

मैंने तो तुम इन्सानों को माटी का बनाकर भेजा था,

तुमने तो मुझे ही माटी का बना दिया।।

त्रेता युग को तुम याद करों, श्रीराम को तुम क्यों भूल गए,

जहां प्रेम, भाईचारा, त्याग को अपनाकर, नर भी भगवान (नारायण) हुए।।

तुम क्यों भूल गए द्वापर को, जहां लालच,काम, क्रोध में कौरवों का संहार हुआ,

और धर्म अधर्म को समझाने हेतु "गीता" का ज्ञान हुआ।।

मैंने तो तुम इन्सानों को माटी का बनाकर भेजा था,

तुमने तो मुझे ही माटी का बना दिया।।

इस कलयुग की भी बात करों, जहां मौर्य, गुप्त, अशोक महान हुए,

मातृभूमि के लिए राणा, शिवाजी जैसे योद्धा बलिदान हुए।

तुम याद करो चरक, आर्यभट्ट, मीहिर को, जिन्होंने विश्व को विज्ञान दिया,

बुद्ध-महावीर को तुम क्यों भूल गये, जिन्होंने विश्व को सुख शान्ति का ज्ञान दिया।।

अरुण जी की एक बात याद आती है, वे कहते हैं:-

"संकट में सुमिरण सब करें, सुख में पिए तारी

गीता का ज्ञान फिर क्या करें जब मति गई हो मारी"

आगे भगवान कहते हैं:-

तुम भूल गए हो अपनों को

गांधी, सुभाष, पटेल, कलाम के सपनों को

तुम अब स्वार्थ में भटके हो,

माया-मोह में अटके हो

तुम्हारा अब कोई धर्म नहीं

मन में कोई मर्म नहीं

देशभक्ति तुम्हारी झूठी है।

अब तुम सोचो, देखो स्वयं को, तुम मुझे क्यों दोष देते हो,

सब तुम्हारे कर्मों का ही फल है, विनाश बो कर अब क्यों रोते हो।

अब तो सब भोगना होगा, अच्छे-बुरें सब को पिसना होगा,

मैं क्योंआया इस धरती पर, अब तो मैं न आऊंगा,

कोई ज्ञान अब शेष नहीं, क्या मैं तुम्हें बताऊंगा।

प्रलय को कौन भला रोक पाएगा, प्रलय को तो आना है।

आज नहीं तो कल आएगा

जो मिट्टी से आया था,वो मिट्टी में मिल जाएगा।

झरोखा 2024-25

पत्रिका हिम-प्रभा के 94 वें प्रकाशन के बाद कार्यालय में बहुत सी गतिविधियां हुई...जिनकी बानगी यादों के झरोखे से प्रस्तुत है...

लेखापरीक्षा सप्ताह 2024:

वित्तीय अनुशासन और वित्तीय नियंत्रण के सूत्रपात को चिन्हित करने वाले चतुर्थ लेखापरीक्षा सप्ताह का उद्‌घाटन मुख्यालय दिल्ली में लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला के मुख्य आतिथ्य में हुआ। इसके अंतर्गत कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) एवं राष्ट्रीय लेखा व् लेखापरीक्षा अकादमी द्वारा संयुक्त रूप से दिनांक 18 से 23 नवम्बर 2024 तक लेखापरीक्षा सप्ताह आयोजित किया, जिसके उद्‌घाटन समारोह में लोक लेखा समिति के माननीय सभापति श्री अनिल शर्मा मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थे।

इसी क्रम में शिमला शहर के व्यस्ततम रिज मैदान में रक्त दान शिविर का आयोजन किया गया:

इस कड़ी में महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों के लिए निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया :

लेखापरीक्षा सप्ताह का समापन 'वॉक-ए-थॉन' से हुआ, जिसमें सीटीओ, शिमला से लेकर राष्ट्रीय लेखा व लेखापरीक्षा अकादमी तक सेहत और जागरूकता से भरी वॉक श्री कृष्णलाल, सहायक जिला शारीरिक शिक्षा अधिकारी के कुशल नेतृत्व में संपन्न हुई।

गणतंत्र दिवस 2025:

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी कार्यालय में 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस का पर्व हर्षोल्लास से मनाया गया। प्रधान महालेखाकार श्री सुशील कुमार ने झंडा लहरा कर कार्यक्रम का आरम्भ किया।

अग्नि सुरक्षा मोक ड्रिल :

कार्यालय के कार्मिकों में अग्नि सुरक्षा उपायों के प्रति जागरूकता और समझ विकसित करने के उद्देश्य से कार्यालय में मोक-ड्रिल का प्रदर्शन किया गया, जिसमें अग्नि सुरक्षा विभाग के अधिकारियों द्वारा अग्नि दुर्घटना के दौरान अपनाए जाने वाले सुरक्षा उपायों की जानकारी दी गई।

स्वास्थ्य शिविर:

कार्मिकों के स्वास्थ्य के प्रति चेतना जागृत करते हुए कार्यालय में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया जिसमें रक्त शर्करा, रक्तचाप, कैल्शियम की कमी, दंत स्वास्थ्य आधी जांचे निःशुल्क की गई।

पुस्तकालय का उद्घाटन एवं उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का दौराः

उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक, (रिपोर्ट्स स्टैट्स-उत्तरी क्षेत्र), सुश्री संध्या शुक्ला ने कार्यालय का दौरा किया तथा कार्यालय के पुस्तकालय का उद्घाटन किया।

योग दिवसः

21 जून, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर कार्यालय में योग और व्यायाम के प्रति जागरूकता फ़ैलाने के उद्देश्य से प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) श्री पुरुषोत्तम तिवारी के आह्वान पर योग दिवस मनाया गया।

स्वतंत्रता दिवसः

15 अगस्त को राष्ट्रीय पर्व का आयोजन हर्षोल्लास से किया गया, जिसमें ध्वजारोहण के पश्चात् झंडे को छः तोपों की सलामी दी गई तथा सांस्कृतिक प्रस्तुतियां की गई।

पौधारोपण कार्यक्रमः

पर्यावरण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दर्शाते हुए कार्यालय में पौधारोपण कार्यक्रम किया गया, जिसमें भारत के उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री कृष्णन संगरण सुब्रमण्यम मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

हिंदी
हमारी हिंदी
राष्ट्र भाषा है हिंदी
हिन्द देश की आन है हिंदी
संस्कृत की लाडली बेटी है हिंदी
हिंदुस्तान की तो मातृभाषा है हिंदी
हमारा मान, सम्मान, अभिमान है हिंदी
हिंदुस्तान के माथे की तो बिंदी है यह हिंदी
सुंदर, मीठी, सरल और सहज भाषा है हिंदी
हम सबकी एकता की अनुपम परंपरा है हिंदी
सब जन को एकसूत्र में पिरोने वाली डोर है हिंदी
काल को जीत लिया वो कालजयी भाषा है हिंदी
स्वतंत्रता की अलख जगाने वाली भाषा है हिंदी
जिसके बिना हिंद थम जाए वो भाषा है हिंदी
गुलामी की जंजीर तोड़ने वाली थी हिंदी
हिंदुस्तान की तो जीवन रेखा है हिंदी
वीर सपूतों की लाडली थी हिंदी
स्वतंत्रता की कहानी है हिंदी
पराई नहीं अपनी है हिंदी
आपकी भी है हिंदी
मेरी भी है हिंदी
सबकी हिंदी
हिंदी हिंदी
हिंदी

वर्ष 2024-25 में सेवानिवृत्त हुए अधिकारी/कर्मचारी (लेखापरीक्षा)

क्रम संख्या	सर्वश्री/श्री/श्रीमती	पदनाम	सेवानिवृत्ति
1.	हेत राम	कैंटीन लिपिक	31.10.2024
2.	प्रेम राज शर्मा	मल्टी टास्क स्टाफ	28.02.2025
3.	निर्मला अलियास सरला देवी	लेखापरीक्षक	31.12.2024
4.	अमर सिंह	सहायक पर्यवेक्षक	30.11.2024
5.	रणधीर सिंह कंवर	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	31.03.2025
6.	प्रदीप सिंह	सहायक पर्यवेक्षक	31.08.2024
7.	आशुतोष पांडे	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	30.09.2024
8.	रामानंद	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	31.12.2024
9.	नन्द लाल	सहायक पर्यवेक्षक	30.11.2024
10.	राजेन्द्र सिंह तांटा	सहायक पर्यवेक्षक	31.12.2024
11.	नितीश थाल्यारी	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	31.07.2024
12.	राज पाल सिंह	पर्यवेक्षक	31.03.2025
13.	विजय कुमार	पर्यवेक्षक	31.05.2024
14.	हरी राम	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.01.2025
15.	महेंद्र प्रकाश शर्मा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.05.2024
16.	सेवा दास	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30.07.2024
17.	प्रवीण कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30.04.2024
18.	हरी सिंह वर्मा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.07.2024
19.	प्रीतम चंद	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.03.2025
20.	रवि कुमार वर्मा	वरिष्ठ उप महालेखाकार	28.02.2025

वर्ष 2024-25 में सेवानिवृत्त हुए अधिकारी/कर्मचारी (लेखा व हकदारी)

क्रम संख्या	सर्वश्री/श्री/श्रीमती	पदनाम	सेवानिवृत्ति
1	मदन लाल बधन	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.05.2024
2	जैसी राम	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.06.2024
3	सुनील दुबे	सहायक पर्यवेक्षक	30.06.2024
4	अजीत सिंह	सहायक पर्यवेक्षक	31.07.2024
5	दिनेश कुमार शर्मा	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.07.2024
6	पराक्रम सिंह	बहुउद्देशीय कर्मचारी (MTS)	31.07.2024
7	गिरधारी लाल	वरिष्ठ लेखाकार	31.07.2024
8	विजय कुमार ठाकुर	पर्यवेक्षक	31.08.2024
9	निर्मल सिंह	पर्यवेक्षक	30.09.2024
10	कुंदल लाल	बहुउद्देशीय कर्मचारी (MTS)	30.09.2024
11	हरी दास	लेखाकार	30.09.2024
12	कुलदीप कुमार रोल्टा	पर्यवेक्षक	31.10.2024
13	देश राज शर्मा	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.10.2024
14	दिनेश राज	पर्यवेक्षक	31.10.2024
15	रमेश ठाकुर	सहायक पर्यवेक्षक	30.11.2024
16	राकेश शर्मा	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.12.2024
17	अशोक कुमार शर्मा	पर्यवेक्षक	31.01.2025
18	निर्मला कुमारी	सहायक पर्यवेक्षक	31.01.2025
19	राजेश कुमार शर्मा	सहायक पर्यवेक्षक	31.01.2025
20	सतीश चन्द	सहायक पर्यवेक्षक	28.02.2025
21	कुशल कुमार	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	28.02.2025
22	देवी सिंह	पर्यवेक्षक	31.03.2025
23	दयाल चंद वर्मा	वरिष्ठ लेखाकार	31.03.2025
24	विजय सिंह	लेखाकार	31.03.2025
25	राजेश कुमार	वरिष्ठ लेखाकार	31.03.2025

हिन्दी पखवाड़ा-2024 प्रतियोगिता परिणाम

प्रतियोगिता	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
1.श्रुतलेख	श्री उज्जवल कुमार राय (लेखाकार)	श्री कुलदीप पाठक (स.ले.प.अ.)	श्री राजेश कुमार शर्मा (स.ले.प.अ.) श्री सौरभ कुमार राय (लेखापरीक्षक)
2.टिप्पण-आलेखन	श्री अभिषेक खंडेलिया (स.ले.प.अ.)	मुकेंद्र कुमार (स.ले.प.अ.)	श्रीमती उषाकिरण (स.ले.प.अ.) श्रीकुलदीप पाठक (स.ले.प.अ.)
3. निबंध	श्री कुलदीप पाठक (स.ले.प.अ.)	श्री संजय कुमार शर्मा (व. लेखापरीक्षक)	श्री प्रकाश सिंह (लेखाकार)
4.चित्र देखो-कहानी लिखो	श्री मोहन शर्मा (स.ले.प.अ.)	श्री अभिनेष मीना (व. लेखापरीक्षक)	श्री अभिषेक मौर्य (निजी सहायक) श्री अभिषेक श्रीवास्तव (स.ले.अ.)
5. कंप्यूटर पर हिन्दी टंकण	श्री अरुण कुमार, (लेखापरीक्षक)	श्री अभिषेक मौर्य, (निजी सहायक)	श्रीमती वीना कश्यप, (सहा. पर्य.)
6. वाद-विवाद	श्री अरुण कुमार, (लेखापरीक्षक)	श्री उदय राजन, (लेखापरीक्षक)	श्री संजय कुमार शर्मा, (व. लेखापरीक्षक)
7. कविता पाठ	श्रीअभिषेक श्रीवास्तव (स.ले.अ.)	श्री अरुण कुमार (लेखापरीक्षक)	श्रीमती विजयलक्ष्मी (स.ले.अ.) एवं श्रीमती सुनीता देवी (लेखापरीक्षक)

हिमप्रभा अंक 94वें के "प्रशंसा पत्र"

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), गुजरात, राजकोट-360001
Office of the Principal Accountant General (A&E), Gujarat, Rajkot-360001
फोन नं.Phone No. 0281-2441600-06, फैक्स नं.Fax No. 0281- 245623

सं.हिंदी अनुभाग/पत्रिका समीक्षा/19/2024-25/जा.क्र-853
दिनांक: 25-02-2025

सेवा में,
व.उप महालेखाकार/प्रशासन,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171003

RL-1714 3/3/25

विषय:- कार्यालयी पत्रिका "हिमप्रभा" के 94 वें अंक की समीक्षा के संबंध में।

मा.महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका **"हिमप्रभा" के 94 वें** अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का खूबसूरती से वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में, सुश्री छाया सिंह की रचना "एक देश ऐसा हो", सुश्री ममता खानचंदानी की रचना "अवतार के अवतरण के पूर्व", श्री निरंजन सूद की रचना "रेबीज", श्री सुरेंद्र कुमार की रचना "हिमाचल प्रदेश की प्राचीन पद्धति" सुश्री सुचित्रा पाण्डेय की रचना "सूरजी का संत-परिवार का रंग", सुश्री अनुराधा सूद की रचना "बैजनाथ घाटी बेहतरीन (यात्रा वृतांत)", सुश्री सीमा सहोता की रचना "जन्माष्टमी", श्री गौरी शंकर की रचना "जीवन एक अद्भुत भय अनुभव (आपबीती)",श्री पवन कुमार की रचना "आई-प्यार की इच्छा" श्री हेतराम जसपाल की रचना "मंज़िल की तलाश (आत्मकथा का अंश)", श्री सूरज शर्मा की रचना "पिता संघर्षों का मसीहा", सुश्री शालू की रचना "मैंने देखा है", श्री जगदीश राणा की रचना "बूढ़े हो जाए जब माँ-बाबा", सुश्री सुनीता देवी की रचना "ज़िंदगी है सस्ती", श्री अरुण कुमार की रचना "कब तक खुद को दोषी ठहराएगा", श्री सेवादास संधू की रचना "आज मैं रिटायर हो रहा हूँ" आदि रचनाएं ध्यानाकर्षित करती हैं।

पत्रिका के माध्यम से "क" क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु आप सभी लेखकों का योगदान अत्यंत सराहनीय है। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर बृक्षों के बीच स्थान पर स्थित कार्यालय का चित्र बहुत सुंदर है, जो पत्रिका को आकर्षक बनाता है। पत्रिका के अंतिम पृष्ठ पर भी देवभूमि हिमाचल के सुंदर चित्र और कार्यालयी चित्र पत्रिका की सुंदरता में वृद्धि करते हैं। पत्रिका की साज-सज्जा बहुत उत्तम है।

आपकी पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ 'हिमप्रभा' परिवार को पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

भवदीय,

(हिन्दी अधिकारी)

Sr DAG (Admn)
D.No. 1463

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम), मध्य प्रदेश
ऑडिट भवन, झाँसी रोड, ग्वालियर

क्रमांक/प्रशासन/हिंदी कार्यान्वयन कक्ष/सम्मति/आवक- दिनांक:23-12-2024

प्रति,

वरिष्ठ उप-महालेखाकार (प्रशासन),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
हिमाचल प्रदेश, शिमला ।

विषय – हिंदी पत्रिका "हिमप्रभा" के 94वें अंक की प्राप्ति पर सम्मति पत्र के प्रेषण के संबंध में ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका 'हिमप्रभा' के 94वें अंक की प्रति प्राप्त हुई है । तदर्थ धन्यवाद । पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है । पत्रिका की साज-सज्जा उत्कृष्ट है । पत्रिका में प्रकाशित समस्त रचनाएं पठनीय, रोचक एवं उपयोगी भी हैं, जिसके लिए सभी रचनाकारों को साधुवाद । श्री अरुण कुमार द्वारा रचित कविता 'मैंने देखा है', श्रीमती सुनीता देवी द्वारा रचित कविता 'जिन्दगी है सस्ती?' एवं श्री जगदीश राणा द्वारा रचित कविता 'कहां गए वो सुहाने दिन' सराहनीय हैं ।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना सहित सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई ।

भवदीय,
RAJESH N HATHWALNE
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिंदी कक्ष

2542631/2025

महालेखाकार (ले0 एवं ह0) का कार्यालय
वीरचंद पटेल पथ,
पटना, बिहार - 800001

OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E),
BIRCHAND PATEL PATH
PATNA, BIHAR - 800001

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

पत्रांक/Letter No.:- हि.अ./ले. व हक./5/पत्रिका प्रतिक्रिया/24-25/110
दिनांक/Date:- 23.12.2024

सेवा में,
वरिष्ठ उपमहालेखाकार/प्रशासन,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा एवं लेखा व हक.) हिमाचल प्रदेश,
शिमला।

विषय:- संयुक्त हिंदी पत्रिका "हिम-प्रभा" के 94वें अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की संयुक्त हिंदी पत्रिका "हिम-प्रभा" का 94वां अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत ही मनमोहक है। पत्रिका विभिन्न विधाओं में लिखी गई स्तरीय रचनाओं का सुंदर संग्रह है, जिसमें संस्मरण, लेख, कविताएं आदि शामिल हैं; विशेषकर, "पिता: संघर्षों का मसीहा" (श्री सूरज शर्मा), "सूरजी का संत-परिवार का रंग" (सुश्री सुचित्रा पाण्डेय), "आज मैं रिटायर हो रहा हूँ" (श्री सेवादास संधू), एवं "वो दौर" (सुश्री शालू) आदि। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक की भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के उत्तम संपादन हेतु पत्रिका परिवार बधाई का पात्र है। पत्रिका के सतत् प्रकाशन एवं उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,

वरिष्ठ उपमहालेखाकार/प्रशासन

24958-99/2024

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
त्रिपुरा, कुंजवन, अगरतला- 799 006

संख्या: हिन्दी अनुभाग/ पत्रिका प्रतिक्रिया/2024-25/828 दिनांक: 19 Dec. 2024

सेवा में,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
शिमला, हिमाचल प्रदेश,
पिन - 171003

विषय: पत्रिका की प्राप्ति पर प्रतिक्रिया के संबंध में।

महोदया/ महोदय,

उपर्युक्त विषयांतर्गत उल्लेखनीय है कि आपके द्वारा प्रकाशित हिन्दी गृह-पत्रिका '(**हिमप्रभा**)' की प्रति प्राप्त हुई है जिसे हम सहर्ष स्वीकार करते हैं। पत्रिका की साज-सज्जा और विन्यास अत्यंत आकर्षक बन पड़ा है जिसके लिए आपको साधुवाद। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनायें अतीव ज्ञानवर्धनीय, प्रेरक और समयानुकूल तथा प्रासंगिक हैं।

आगे, आपसे यही आशा करते हैं कि आप इसी प्रकार इस पत्रिका का प्रकाशन निरंतर जारी रखेंगे और राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार और बढ़ावा देने में अपनी महती भूमिका द्वारा सदैव सभी को अभिप्रेरित भी करते रहेंगे। इन्हीं कामनाओं के साथ संपादक मण्डल सहित समस्त पत्रिका परिवार को धन्यवाद एवं बहुत-बहुत बधाई।

सादर, धन्यवाद !

भवदीय,
19/12/24
हिन्दी अधिकारी (हिन्दी अनुभाग)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
त्रिपुरा, कुंजवन, अगरतला- 799 006

संख्या: हिन्दी अनुभाग/ पत्रिका प्रतिक्रिया/2024-25/806 **दिनांक:** 19 Dec. 2024

सेवा में,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
शिमला, हिमाचल प्रदेश,
पिन - 171003

विषय: पत्रिका की प्राप्ति पर प्रतिक्रिया के संबंध में।

महोदय/ महोदया,

उपर्युक्त विषयांतर्गत उल्लेखनीय है कि आपके द्वारा प्रकाशित हिन्दी गृह-पत्रिका '**हिमप्रभा**' की प्रति प्राप्त हुई है जिसे हम सहर्ष स्वीकार करते हैं। पत्रिका की साज-सज्जा और विन्यास अत्यंत आकर्षक बन पड़ा है जिसके लिए आपको साधुवाद। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएँ अतीव ज्ञानवर्धनीय, प्रेरक और समयानुकूल तथा प्रासंगिक हैं।

आगे, आपसे यही आशा करते हैं कि आप इसी प्रकार इस पत्रिका का प्रकाशन निरंतर जारी रखेंगे और राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार और बढ़ावा देने में अपनी महती भूमिका द्वारा सदैव सभी को अभिप्रेरित भी करते रहेंगे। इन्हीं कामनाओं के साथ संपादक मण्डल सहित समस्त पत्रिका परिवार को धन्यवाद एवं बहुत-बहुत बधाई।

सादर, धन्यवाद !

भवदीय,
19/12/24
हिन्दी अधिकारी [हिन्दी अनुभाग]

भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग,
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, केन्द्रीय व्यय,
पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा
द्वितीय बहुतलीय कार्यालय भवन, छठा तल, निजाम पैलेस,
234/4, एजेसी बोस रोड, कोलकाता-700020
फोन: 2289/4111/12/13-033, फैक्स: 033-2289-4060
ई मेल- bnesdkolkata@cag.gov.in

संख्या/813393/2024 दिनांक-09-12-2024

10 DEC 2024

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी(राजभाषा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हिमाचल प्रदेश,
गार्टन कैसल भवन,
शिमला-171 003

विषय:- हिंदी पत्रिका "हिम प्रभा" के 94 अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी वार्षिक पत्रिका "हिम प्रभा" के 94 अंक की प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। "हिम प्रभा" राजभाषा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिन्दी मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभा रही है। विशेषकर निरंजन सूद द्वारा रचित आलेख 'रेकी', मुकेन्द्र कुमार द्वारा रचित आलेख '**विपश्यना: ध्यान की प्राचीन पद्धति**', श्रुति द्वारा रचित आलेख '**नायक**', हेतराम उलफती द्वारा रचित आलेख '**मंजिल की तलाश**', सूरज वर्मा द्वारा रचित कविता '**वित्त- संघर्षों का मसीहा**' और जगदीश राणा द्वारा रचित कविता '**कहां गए वो सुहाने दिन**', अत्यन्त ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय है। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएँ उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक तथा पठनीय हैं। इससे सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रति लोगों में निश्चित ही प्रेरणा और उत्साह का संचार होगा। पत्रिका की साज-सज्जा और अन्तर्निहित फोटो आकर्षक एवं मनोरम है।

हिन्दी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिका "हिम प्रभा" के उज्ज्वल भविष्य के लिए "आकांक्षा" परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी(राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) PUNJAB, CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149
Email-agaupunjab@cag.gov.in

क्रमांक- हि.अ./हिंदीपत्रिकासमीक्षा/2024-25/820105/2024 दिनांक:17-12-2024

सेवा में,

वरिष्ठ उप महालेखाकार(प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171003

विषय: संयुक्त हिंदी पत्रिका 'हिमप्रभा' के 94वें अंक की समीक्षा।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका 'हिमप्रभा' के 94वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय हैं विशेष तौर पर सुश्री श्रुति की "नायक", श्री सूरज वर्मा की "वित्त - संघर्षों का मसीहा" एवं सुश्री सुप्रिया पाण्डेय की "वृद्धों का संग-परिवार का रंग" आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ।

भवदीय,

EKTA
(हिंदी अधिकारी)

सं: प्रशा.।/हिअनुभाग/747/ईपत्रिका/2024/8157

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(अवसंरचना), नई दिल्ली
तृतीय तल, ए-स्कन्ध, इन्द्रप्रस्थ भवन,
इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली-110002

OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT (INFRASTRUCTURE), NEW DELHI
3rd Floor, A-Wing, Indraprastha Bhawan,
I.P. Estate, New Delhi-110002

दिनांक /DATE 22.11.24

सेवा में,

वरिष्ठ उप-महालेखाकार (प्रशासन)
प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171003

विषय: <u>हिंदी वार्षिक पत्रिका 'हिमप्रभा' के 94वें अंक के प्रेषण के संबंध में।</u>

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिंदी को समर्पित वार्षिक पत्रिका 'हिमप्रभा' की ई-प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ आकर्षक है। संपादित लेख 'विपश्यना' एवं 'नायक' ज्ञानवर्धक हैं तथा 'मैंने देखा है', और 'कहाँ गए वो सुहाने दिन' जैसी कविताएँ पठनीय हैं। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार विशेष रूप से बधाई का पात्र है। 'हिमप्रभा' पत्रिका परिवार को पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं कुशल संपादन के लिए 'संवाद' पत्रिका परिवार की ओर से अनेकानेक शुभकामनाएं।

भवदीया,

पूनम शर्मा
(हिंदी अधिकारी)

वक्ताओं की ताकत भाषा,
लेखक का अभिमान है भाषा,
भाषाओं के शीर्ष पर बैठी,
हमारी प्यारी हिंदी भाषा।

हम भारतीय सभी भाषाओं का करते हैं सम्मान,
पर हिंदी ही है हमारी पहचान ।

हिन्दी पखवाड़ा-2024 समापन समारोह

देवभूमि हिमाचल

Printed@AJEET GRAPHICS, SHIMLA 9816055391